कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्षः18, अंकः 10
जुलाई : 2019

क्या भारत में हर समस्या के लिए नेहरू जिम्मेदार है?. 06

बढ़ता हुआ सामाजिक विच्छेद और शिक्षा सरोकार....12

हिन्दुओं में विवाह रात्रि में क्यों होने लगे? 16

भय, कानून का 19

इस अंक में......

न बिजली, न पानी फिर भी है संस्कारधानी............ 09
धर्म का राजनीति में समावेश 10

स्थायी स्तम्भ
अपनी बातः ममता दीदी-जरा देख के चलो 04
प्रेरक प्रसंग 05

मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम 14
राजनीति से परे विचार 15
राजनीति से परे विचार? 20

हिन्दीतर भाषी रचनाकार-ऊँ नमः शिवाय-विजय कुमार सम्पत्त 21
कविताए/गीत/ग़ज़लः सतीश कुमार मिश्र 'सत्य', श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली', अजय द्विवेदी, कुं० वीरेन्द्र सिंह विद्रोही, डॉ० गौरी शंकर श्रीवास्तव 'पथिक', ...23–24
कहानीः तपती रेत-ज़ेबा रशीद 25
साहित्य समाचार, ...8, 18, 28, 32
लघु कथाएंः प्रदीप कुमार शर्मा 29
स्वास्थ्यः सेहत के लिए जरुरी है 30
चिट्ठी नहीं आती 34

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा
संरक्षक सदस्य
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया, उ.प्र.

प्रबंध सम्पादक
श्रीमती जया
विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

ब्यूरो
ब्रज बिहारी ब्रजेश, खीरी
निगम प्रकाश कश्यप, मिर्जापुर, उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संपादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 का0: 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

सभी पद अवैतनिक हैं
पत्रिका में प्रकाशित रचना का कोई भी पारिश्रमिक देय नहीं है।

प्रिंट लाईन–विश्व स्नेह समाज राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका, यूपीहिन्दी/2001/8380, सर्वाधिकार सुरक्षित है. स्वामी की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुर्न प्रकाशन प्रतिबंधित है. स्वतत्वाधिकारी स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक और संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग, इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

नोटःपत्रिका में प्रकाशित रचनाओं, समाचारों इत्यादि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं. इसके लिए लेखक, रचनाकार, सूचनाकार स्वयं ही उत्तरदायी हैं. जन–जन को सूचना मिलने के उद्देश्य से सभी के विचार, संदेश, आलोचना, शिकायत छापी जाती है. पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के वाद–विवाद का निपटारा केवल इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, की अदालतों में होगा.

अपनी बात

ममता दीदी-जरा देख के चलो

ये भाई ज़रा देख के चलो,
आगे ही नहीं, पीछे भी.
दाये ही नहीं बाये भी.
ऊपर ही नहीं, नीचे भी.
आज भारत देश एक सर्कस है

लग रहा है ममता दीदी अपनी आंख और कान को पूर्णतया बंद करके बैठी है, तभी तो आजकल तैश में आ जा रही है, उन्हें कुछ मामलो में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल से सीखना चाहिए. पहले उनके भी यही हालात थे, लेकिन अब वे और उनकी टीम का केन्द्र में दोबारा सत्तासीन भारतीय जनता पार्टी के उकसावे में नही आ रही है और न ही कोई जल्दी क्रिया प्रतिक्रिया दे रही है. बस चुपचाप अपना काम कर रही है. जनता सब कुछ जानती है, लेकिन सब देख नही पाती है क्योंकि विगत कई कई वर्षो से मीडिया वही दिखा रहा है जो केन्द्रीय सत्ता पक्ष दिखाना चाह रहा है. ममता दीदी आपको भी आंख-कान खोलकर समयानुकूल बनते हुए चुपचाप अपना काम करते रहने और भाजपा की राजनीति से बचने की जरूरत है. अगर भाजपा के उकसावे में ऐसी आती रही तो सत्ता आपके हाथ से जाना सुनिश्चित है. एक डॉक्टर को मरीज के परिवार वालों द्वारा दुर्व्यवहार करने पर राष्ट्रीय मीडिया एवं परिदृष्य में बहस का मुद्दा बन जाता है. राष्ट्र व्यापी हड़ताल, विरोध होने लगता है. प्रधानमंत्री जी अपने कथित पांच-सात कार्यकर्ताओं की मृत्यु पर ट्वीट पर ट्वीट करने लगते है, केन्द्रीय गष्ह मंत्रालय राज्य सरकार से रिपोर्ट मांग लेता है, राजस्थान में रामकथा के दौरान करंट लगने से 14 लोगों की मृत्यु पर मोदी जी ट्वीट कर देते है, गृहमंत्रालय सजग हो जाता है लेकिन वही गृह मंत्रालय एवं मीडिया गुजरात में एक कोचिंग में 40 बच्चों की मौत हो जाने पर, एक गटर में सात लोगों के मरने पर, बिहार में 10 दिन में एक्यूट इन्सेफ्लेटाईटिस बुखार से 155 बच्चों की मौत, उत्तर प्रदेश में 17 दिन में 72 हत्याएं और 35 रेप होने पर मौन साधे रहता है. यानि जिन राज्यों में सत्ता नही है वहां की छोटी घटनाएं भी राष्ट्रीय हो जाती है, लेकिन केन्द्रीय सत्तासीन पार्टी के राज्यो में बड़ी से बड़ी घटनाएं भी गौड़ हो जाती है. घटनाओं को हिन्दू-मुस्लिम, ब्राह्मण-दलित, सवर्ण-पिछड़ा का रूप देकर असली मुद्दे को गौड़ कर दिया जाता है. हमारे लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ पत्रकारिता की भी आंखे बंद हो जाती है. वह तो वही दिखाता है, वही छापता है जो केन्द्रीय सत्ता को खुश कर सके. जो कुछ गिने-चुने पत्रकार कुछ आईना दिखाने का प्रयास करते है तो पत्रकारों के साथ अभ्रदता, बिना वजह जेल में डालना, मारना, पीटना, धमकी देना आज आम बात हो गई है. कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि केन्द्रीय सत्तासीन पार्टी के खिलाफ कुछ देखो मत, सूनो मत और बोलो मत. सीमा पर जवान प्रतिदिन शहीद हो रहे है, जब सीमा पर 10 जवान शहीद होते है और दो आतंकवादी तो मीडिया खबर बनाती है जम्मू कश्मीर में दो आतंकवादी मारे गये. किसान आत्म हत्याएं कर रहे है, कानून व्यवस्था जर्जर हो चुकी है, भ्रष्टाचार अपनी सारे हदे पार कर रहा है. मीडिया को मौन रहना पड़ रहा है, जनता भी मौन, विपक्ष भी मौन. ऐसे में आलम में आप भी मनमोहनी चुप्पी यानि मौन साध लीजिए. ममता दीदी अभी भी समय है वरना सत्ता गई. जनता को जागरूक करिये, जनहित देशहित के कार्य करते रहिए. अपनी ऊर्जा को चुनाव में खर्च करियेगा.

संपादक

प्रेरक प्रसंग

जीवन का रहस्य

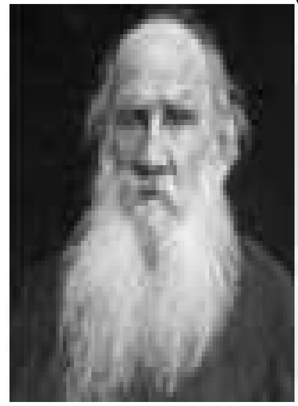

एक जिज्ञासु शिष्य ने टॉल्स्टाय से पूछा, 'जीवन क्या है?' टॉल्स्टाय ने कहा, एक बार एक यात्री जंगल की राह पर चला जा रहा था. सामने से एक हाथी उसकी ओर लपका. अपने प्राण बचाने के लिए तत्काल वह एक कुएँ में कूद गया. कुँए में वटवृक्ष था. उसकी एक शाखा को पकड़कर वह झूल गया. उसने नीचे देखा साक्षात् मौत खड़ी थी. एक मगरमच्छ मुँह खोले बैठा था. भय कंपित वह मृत्यु का साक्षात् दर्शन कर रहा था. उसने ऊपर देखा-शहद के छत्ते से बूँद-बूँद मधु टपक रहा था. वह सब कुछ भूल मधु पीने में तल्लीन हो गया, लेकिन यह क्या? जिस पेड़ से वह लटका था, उसकी जड़ को दो चूहे कुतर रहे थे-एक उजला था, दूसरा काला. जिज्ञासु ने पूछा, 'इसका अर्थ?' 'तू नहीं समझा' टॉल्स्टाय ने कहा, 'वह हाथी काल था, मगर मृत्यु, मधु जीवन-रस था और दो चूहे दिन-रात. बस यही तो जीवन है. शिष्य सन्तुष्ट हो गया.

क्या भारत में हर समस्या के लिए नेहरू जिम्मेदार है?

1945 से 1971 तक रिपब्लिक ऑफ चाइना सुरक्षा परिषद का सदस्य था. 1971 के बाद पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना सुरक्षा परिषद का सदस्य बना. तब तक नेहरू का निधन हो चुका था. बीबीसी हिन्दी ने 27 सितंबर 1955 को संसद में दिए गए नेहरू के बयान का हवाला है 'यूएन में सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य बनने के लिए औपचारिक या अनौपचारिक रूप से कोई प्रस्ताव नहीं मिला. कुछ संदिग्ध संदर्भो का हवाला दिया जा रहा है जिसमें कोई सच्चाई नही है. संयुक्त राष्ट्र में सुरक्षा परिषद का गठन यूएन चार्टर के तहत किया गया था और इसमें कुछ खास देशों की स्थायी सदस्यता मिली थी.

भारत ने अपनी समस्याओं को पहचान लिया है. सारी समस्याओं का एक ही नाम है, नेहरू. भारत में ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसकी जड़ में नेहरू नहीं हैं. अगर नेहरू नही है तो वह समस्या नहीं है. दुनिया के पहले ऐसे नेता है जिन्होंने अकेले दम पर इतनी समस्याएं पैदा करी है. ट्रैफिक सिग्नल पर गाय दिख जाए, आपको कहना चाहिए कि नेहरू दोषी है. हार्वर्ड वालो को रिसर्च में हार्डवर्क करना चाहिए कि क्या कोई ऐसी समस्या है, जिसके लिए नेहरू निर्दोष है. दोषी नही है. जो कोई भी ऐसी समस्या खोज कर लाएगा जिसके लिए नेहरू ज़िम्मेदार नही है तो मैं उसे अपने खर्चे से नारियल दूंगा जिसका नाम होगा नेहरू नारियल. राजनीति के रामगढ़ में नेहरू फंस गए है. इसलिए आज जवाहर लाल हाज़िर है. हम मुकदमा चलाएंगे. नेहरू को सज़ा नहीं मिली तो गब्बर सिंह नेहरू को सजा देगा. 2014 के बाद पब्लिक डिबेट में नेहरू ने ऐसी वापसी की है जैसे कभी किसी ज़माने में दो तीन साल के गैप के बाद अचानक अशुमान गायकवाड़ की टीम इंडिया में वापसी हो जाती थी. चीन ने मसूद अज़हर को ग्लोबल आतंकी घोषित नहीं किया तो इसमें भी नेहरू का नाम आ गया.

चीन से कोई गुस्सा नहीं. चीन की पिचकारी को भी कुछ नही कहा, मगर रविशंकर प्रसाद ने नेहरू को ज़िम्मेदार बता दिया. अरुण जेटली ने तो अपने ट्वीट में क्या नहीं कहा. जेटली ने ट्वीट कर इतना ही कहा कि तुम्हारे दादा की गलती से हुआ. भारत आपके परिवार की गलतियों को दुरुस्त कर रहा है. कश्मीर और चीन दोनों के लिए एक ही व्यक्ति जिम्मेदार है.

मुझे लगा था कि व्हाट्सएप यूनिवर्सिटी में नेहरू का सारा सिलेबस पूरा हो गया है. लेकिन चीन वाले एंगल मार्केट में नया नया सा लगा. रविशंकर प्रसाद ने हिन्दू अखबार में छपे शशि थरूर की किताब पर एक लेख का हवाला देते हुए कहा कि नेहरू ने संयुक्त राष्ट्र के सुरक्षा परिषद की सीट चीन को दे दी. शशि थरूर को इंकार करने के लिए सात ट्वीट करने पड़े है. थरूर ने कहा कि चीन तो 1945 से ही सुरक्षा परिषद का सदस्य था. 1949 में जब माओत्से तुंग की कम्युनिस्ट सरकार बनी तब चांग काई शेक ताईवान चले आए जिसे निर्वासित सरकार के रूप में मान्यता मिली. यह सरकार खुद को रिपब्लिक ऑफ चाइना कहती थी. नेहरू को लगा कि छोटे से द्वीप को सुरक्षा परिषद का सदस्य कैसे बनाया जा सकता है. नेहरू ने अन्य स्थायी सदस्यों से कहा कि कम्युनिस्टों के प्रभाव वाले चीन को शामिल किया जाए. अमरीका ने मना कर दिया और भारत से कहा कि वही

सदस्यता ले ले. नेहरू को लगा कि यह गलत होगा. चीन के साथ एक और नाइंसाफी होगी. भारत अपने दम पर एक दिन स्थायी सदस्यता लेगा. थरूर ने लिखा है कि वैसे भी भारत चीन को हटाकर सदस्य नहीं बन सकता था जब तक कि संयुक्त राष्ट्र के चार्टर में बदलाव नहीं हो सकता था. और अमरीका पहल करता भी तो रूस वीटो कर देता. इसलिए यह कहना गलत है कि नेहरू ने चीन को सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता गिफ्ट कर दी.

1945 से 1971 तक रिपब्लिक ऑफ चाइना सुरक्षा परिषद का सदस्य था. 1971 के बाद पिपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना सुरक्षा परिषद का सदस्य बना. तब तक नेहरू का निधन हो चुका था. बीबीसी हिन्दी ने इस पर एक लेख प्रकाशित किया है. इस लेख में 27 सितंबर 1955 को संसद में दिए गए नेहरू के बयान का हवाला है जिसे मैं पढ़ रहा हूं. इस दिन नेहरू जवाब देते हैं कि 'यूएन में सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य बनने के लिए औपचारिक या अनौपचारिक रूप से कोई प्रस्ताव नहीं मिला. कुछ संदिग्ध संदर्भों का हवाला दिया जा रहा है जिसमें कोई सच्चाई नहीं है. संयुक्त राष्ट्र में सुरक्षा परिषद का गठन यूएन चार्टर के तहत किया गया था और इसमें कुछ खास देशो की स्थायी सदस्यता मिली थी. चार्टर में बिना संशोधन के कोई बदलाव या कोई नया सदस्य नही बन सकता. ऐसे मे कोई सवाल ही नहीं उठता कि भारत को सीट दी गई और भारत ने लेने से इंकार कर दिया. हमारी घोषित नीति है कि संयुक्त राष्ट्र में सदस्य बने के लिए जो भी देश योग्य हैं उन सबको शामिल किया जाए.'

रविशंकर प्रसाद के अलावा वित्त मंत्री अरुण जेटली ने अपने ट्वीट में 2 अगस्त 1955 को मुख्यमंत्रियों के नाम नेहरू के एक पत्र का हवाला दे दिया. बीजेपी ने भी 2 अगस्त 1955 के पत्र का हवाला दिया जिसमें उनके अनुसार लिखा हुआ था, 'अनौपचारिक रूप से अमरीका ने राय दी थी कि चीन को संयुक्त राष्ट्र में लिया जाए मगर सुरक्षा परिषद में नहीं और भारत को चीन की जगह लिया जाना चाहिए. हम इसे स्वीकार नहीं कर सकते क्योंकि चीन से रिश्तों पर असर पड़ेगा और यह चीन जैसे महान देश के साथ अन्याय होगा कि वह सुरक्षा परिषद में न रहे.'

चार्टर में बिना संशोधन के कोई बदलाव या कोई नया सदस्य नहीं बन सकता. ऐसे में कोई सवाल ही नहीं उठता कि भारत को सीट दी गई और भारत ने लेने से इंकार कर दिया. हमारी घोषित नीति है कि संयुक्त राष्ट्र में सदस्य बने के लिए जो भी देश योग्य हैं उन सबको शामिल किया जाए.'

क्या वाकई नेहरू ने ऐसा कहा था. हमने सलेक्टेड वर्क्स ऑफ जवाहरलाल नेहरू सेकेंड सीरीज़ वाल्यूम 29 के पेज नंबर 439, 440, 441 पेज नंबर पर इस पत्र को देखा. सलेक्टेड वर्क्स ऑफ जवाहरलाल नेहरू के सारे पत्रों और लेखों को छापा गया है. पार्ट वन में 14 वाल्यूम है. 60 वाल्यूम हैं सेकेंड पार्ट में.

लंबा पत्र है. इसके पैरा 3 में नेहरू लिखते हैं कि जीनिवा में अमरीका और चीन के राजदूत की मुलाकात दोनों देशों के संबंधों की दिशा में छोटी शुरूआत है, फिर भी महत्वपूर्ण है. चीन में कैद अमरीकी वायुसैनिकों को रिहा किए जाने से संबंधों में काफी सुधार होगा. प्रधानमंत्री चाउ एन लाई का भाषण भी नरम था. इस तारीख के पत्र में तो संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद को लेकर कोई बात नहीं है तो फिर जेटली किस पत्र का हवाला दे रहे हैं. सरकार अक्सर कहती रही है कि भारत को सुरक्षा परिषद का सदस्य बनाया जाना चाहिए. क्या सरकार ने कभी नेहरू को मिले प्रस्ताव का हवाला दिया है, इस बारे में वित्त मंत्री न सही तो कम से कम कृषि मंत्री तो बता ही सकते हैं.

1929 में लाहौर कांग्रेस में नेहरू कांग्रेस के अध्यक्ष बनाए गए थे तब उनकी उम्र मात्र 40 साल थी. सोचिए 40 साल की उम्र का यह नौजवान आज़ादी की लड़ाई के एक महत्वपूर्ण संगठन का नेतृत्व संभाल रहा था. गांधी लाहौर कांग्रेस में नेहरू का परिचय कराते हुए कहते हैं कि वह निसंदेह एक चरमपंथी है. जो अपने वक्त से कहीं आगे की सोचते हैं. लेकिन वह इतने विनम्र और व्यावहारिक हैं कि रफ्तार को इतना तेज़ नहीं करते कि चीज़े टूट जाएं. वह स्फटिक की तरह शुद्ध है. उनकी सत्यनिष्ठा संदेह से परे है. जो भय और निंदा से परे है. राष्ट्र उनके हाथों में सुरक्षित है. आज़ादी की लड़ाई में नेहरू 9 बार जेल गए. 3259 दिन जेल में काटे है. 9वीं बार जब जेल गए तो 1051 दिन तक बंद रहे. यानी तीन साल तक लगातार जेल में काटे. आज कल के नेताओं की एंटायर डिग्री का पता नहीं चलता मगर नेहरू ने करीब 550 पन्नों की किताब लिखी थी, डिस्कवरी ऑफ इंडिया. भारत एक खोज. हमने यह जानकारी पीयूष बबेले की किताब नेहरू मिथक और सत्य से ली है.

यह किताब हिन्दी में है और संवाद प्रकाशन ने छापी है. यह किताब व्हाट्सएप यूनिवर्सिटी में नेहरू को लेकर फैलाए गए झूठ का जवाब देती है. हमारे नेता हर बात में नेहरू को ज़िम्मेदार मानते हैं.

कोलकाता के अखबार टेलिग्राफ ने तो कमाल का पेज बनाया है. उन आरोपों को जमा किया है जिसमें नेहरू को जिम्मेदार बताया गया है. नेहरू की विरासत को मिटा देने का सुख किसे मिल रहा है और किस कीमत पर मिल रहा है, इसे समझने का वक्त कहां है. इस बहस में एक तथ्य यह भी आ गया है कि वाजपेयी ने भी चीन के साथ तिब्बत को लेकर संधियां कर गलती की थी.

2014 के बाद व्हाट्सएप यूनिवर्सिटी में नेहरू के बारे में इतना झूठ बोला गया कि कई लोग उसे सही मान कर घूमते रहते हैं. उन जानकारियों को दुरुस्त करना अब असंभव है. इस प्रोजेक्ट के दो मकसद लगते हैं. नेहरू की छवि खराब करना और दूसरा यह साबित कर देना कि झूठ बोल कर लोगों को उल्लू बनाया जा सकता है.

साभारः श्री रविश कुमार, एनडीटीवी

लघु कथा प्रतियोगिता–2019

इस प्रतियोगिता में देशी–विदेशी कोई भी हिन्दी सेवी सहभागी हो सकता है. यह प्रतियोगिता तीन चरणों में सम्पन्न होगी. अंतिम चरण में सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागी को रुपये 5000/ प्रदान किए जाएंगे. अंतिम चरण के सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र दिया जाएगा। सभी प्रतिभागियों की रचनाओं को पुस्तकाकार में प्रकाशित भी किया जा सकता है. कृपया फोन कर जानकारी ना मांगे, अणुडाक(ई–मेल) या व्हाटसूएप पर आवेदन करें पूरा विवरण नियम एवं शर्तो सहित प्रेषित कर दिया जाएगा.

नियम एवं शर्ते

01 प्रतिभागी को एक लघुकथा जिसकी शब्द सीमा अधिकतम 300(तीन सौ शब्दों) से अधिक की न हो मौलिकता के प्रमाण पत्र के साथ भेजनी होगी.

02 प्रथम चरण में इन लघुकथाओं को एक पुस्तकाकार में प्रकाशित किया जा सकता है. जिसकी एक प्रति साधारण डाक से प्रतिभागी को भी भेजी जाएगी.

03 पाठकों की राय के आधार पर सर्वश्रेष्ठ दस का चयन किया जाएगा. जो द्वितीय चरण के प्रतिभागी होगें.

04 द्वितीय चरण के प्रतिभागियों की लघुकथा को पाठकों की राय एवं तीन सदस्यीय निर्णायक मंडल के निर्णय के आधार पर सर्वोच्च एक का चयन किया जाएगा.

05 विजेता को फरवरी 2020 में आयोजित होने वाले 18वें साहित्य मेला के सुअवसर पर यह विजेता का प्रमाण पत्र व निर्धारित राशि प्रदान की जाएगी।

06 प्रतिभागी को लघुकथा के साथ एक फोटो, नाम, पिता का नाम, जन्म तिथि, योग्यता तथा रुपये दो सौ का धनादेश/डीडी, अथवा **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी भी षाखा से **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'** के नाम से **खाता संख्याः 538702010009259** में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा.

आवेदन की अंतिम तिथि 15 नवम्बर 2019

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
65ए/2, रामचन्द्र मिशन रोड, लक्सों कंपनी के सामने, मुण्डेरा,
इलाहाबाद–211011
सं0: 9335155949 sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

विशेषः कृपया मोबाइल पर संपर्क ना करें।

* नियम एवं शर्तो में आंशिक परिवर्तन संभव है।

ये आग कब बुझेगी

न बिजली, न पानी फिर भी है संस्कारधानी

-राम प्रकाश वरमा, लखनऊ
09839191977

उत्तर प्रदेश की संस्कारधानी में संस्कारवान सियासी दल के संस्कारी महंत के नेतृत्व की सरकार ने ढोल-नगाड़े बजा कर स्वछता अभियान चलाकर करोड़ों रूपये फूंक दिए, अफसरों को सुधरने की सख्त चेतावनी दे दे कर समूची मीडिया में सुर्खियां बटोरीं. बिजली-पानी, आवारा जानवरों के तमाम इंतजामात के लिए ढपोरशंखी ऐलान किये, बंदरों के आतंक से छुटकारा पाने के लिए हनुमान चालीसा पाठ का ज्ञान देने और आवारा कुत्तों के लिए नगर निगम को आँख दिखाने के बावजूद सब कुछ पहले से बदतर हालात में है. लेसा और जल संस्थान की लापरवाही का आलम ये है कि पूरे शहर में कभी भी बिजली गुल हो जाती है, कभी भी पानी गायब हो जाता है. कभी भी लाइन पर काम करते हुए संविदा कर्मचारी मौत के मुंह में समा जाते हैं. यही हाल सीवर की सफाई करने वाले संविदाकर्मियों और खुले मेनहोलों में गिरने वालों का है. गंदगी का आलम ये है कि गली-गली कचरे से गंधा रही और नालियां बजबजा रहीं हैं. भीषण गर्मी में मच्छरों की फौज हमलावर है. मजा इस बात का कि एनजीटी से लेकर उच्च न्यायालय तक चेतावनी दे रहे हैं फिर भी अनुशासित अफसरान काम करने के बजाये जज के घर के सामने कचरा डलवाने का अपराधिक कृत्य अंजाम दे रहे हैं!

राजधानी से छपने वाले तमाम अखबार, न्यूज पोर्टल इन खबरों को रोज सुर्खियाँ बना रहे हैं. इन खबरों में किन इलाकों में लोग पानी के लिए रतजगा कर रहे हैं या कहां पानी आया ही नहीं और आया तो गंदा आया, कहाँ टैंकर बने सहारा. कहां कितने पानी की जरूरत है और कितना पानी सप्लाई किया जा रहा. इससे भी बदतर हालात बिजली गुल होने के हैं, अँधेरे में गर्मी की मार से झुलसे राजधानीवासी बीमारी की चपेट में लगातार आ रहे है. इसकी गवाही के लिए किसी भी अस्पताल, डाक्टर के दवाखाने में बेशुमार कराहती-कांखती भीड़ देखी जा सकती है. उस पर तुर्रा ये कि आप किसी भी शिकायती फोन को लगायें वो उठता ही नहीं अगर गलती से उठ गया तो उठाने वाला किसी दूसरे पर अपनी बला टाल देगा जो उपलब्ध ही नहीं होगा. हां, भुगतान बिल समय से पहले आ जाता है, वो भी अनाप-शनाप रकम का जिस पर बाबूओं से लेकर इंजीनियर तक अपनी कमाई का बना लेते हैं. कब क्या बढ़ाया गया तक कोई बताने की जहमत नहीं उठाता? छतों पर बंदर खास करके पानी की टंकियों, गमलों में लगे पेड़-पौधों और कपड़ों को अपना निशाना बना रहे है. पानी की टंकियों के पाइप तोड़ देने से लेकर टंकी का पानी गंदा कर देना उनका दैनिक व्यायाम है. गौरतलब है आजकल लखनऊ में जेठ के मंगल के चलते हुमान जी की आराधना घरों से लेकर हनुमान मन्दिरों में जारी है, हर दो किलोमीटर पर भंडारे आयोजित किये जा रहे हैं. चारो ओर हनुमान चालीसा का पाठ गूँज रहा है मगर मुख्यमंत्री योगी का ज्ञान काम नही आ रहा, बल्कि वानर सेना का उत्पात 45 डिग्री तापमान की आग उगलती धूप में और उग्र होता जा रहा है. यहाँ एक बात और बतानी जरूरी होगी कि यदि आप छतों खाने का सामान बंदरों के लिए डाल दें तो वे उसमे दिलचस्पी नहीं लेते. ठीक यही हाल कुत्तों का है, रोटी नहीं खायेंगे. उनका आहार हड्डियां, हगीज और कचरा है. इन कुत्तों का शिकार अस्पतालों में नवजात बच्चे तक आये दिन बन रहे हैं. राह चलते लोगों या कहीं भी खेलते बच्चों को निशाना बनाना आम है. सांड और गायें गली-कूचों से लेकर राजपथ तक लोगों को पटक कर अस्पतालों के हड्डी विभाग को गुलजार किये हैं.

छत पे बन्दर, घर में अंधेरा पानी की बूंद नहीं और दरवाजे पर कुत्ते, गाय-सांड, गली-सडकों पर फैला बेतरतीब कचरा, फिर भी मुस्कराइये लखनऊ आपका स्वागत करता है. आदमी मुस्करा कर कैसे जिए? क्या संस्कारवान सरकार कोई तरकीब बताएगी या कोई जतन करेगी? या सिर्फ विकास का ढोल बजाएगी?

धर्म का राजनीति में समावेश

-अनामिका श्रीवास्तव
ग्राम-कसेहटी, रायबरेली

धर्म का हमारे समाज और जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है. यहॉ तक कि यह पूज्य है. किन्तु इस विषय पर आगे बढ़ने से पहले इसका अर्थ जानना आवश्यक है.

धर्म का अर्थ है धारण करना यानि सच को धारण करना एवं रीलिजियन का अर्थ हैं सम्प्रदाय! धर्म हमें इस बात की शिक्षा देता है कि हमें क्या धारण (ग्रहण) करना चाहिए और क्या नही? वह चाहे कोई क्षेत्र हो. धर्म सही और गलत में अन्तर का निर्धारण करता हैं.

धर्म सदैव सच पर चलने की प्रेरणा देता है. धर्म समस्त मानव समाज के लिये एक जैसा है. उदाहरणार्थः- सच बोलना, माता-पिता की सेवा एवं सम्मान सभी धर्मो के प्रति सम्मान की भावना, असहाय व्यक्ति की सहायता परोपकार, कर्तव्यनिष्ठा की भावना जैसे न जाने कितने कार्य है जो धर्म कहलाते हैं और किसी विशेष सम्प्रदाय से संबंधित नहीं हैं. वरन् सभी सम्प्रदायों से संबंधित है. उपर्युक्त समस्त बाते धर्म के व्यापक अर्थ और क्षेत्र को दर्शाती हैं.

> **धर्म सही और गलत में अन्तर का निर्धारण करता है. धर्म सदैव सच पर चलने की प्रेरणा देता है. धर्म समस्त मानव समाज के लिये एक जैसा है. अपने इष्ट को प्रसन्न करने की आराधना पद्धति अलग-अलग हो सकती है.**

हमारे समाज में आज जिसे धर्म का रूप माना जाता है. वह हैं अध्यात्म क्षेत्र में संप्रदाय या व्यक्ति द्वारा अपनायी गयी पूजा या अपने इष्ट को प्रसन्न करने की आराधना पद्धति हैं. वह तो अलग-अलग हो सकती हैं. कोई सम्प्रदाय उदार हो सकता है और कोई कट्टर.

यदि हम बात राजनीति की करे तो पायेगें कि वहॉ पर भी धर्म के व्यापक अर्थ को संकुचित रूप का खूब प्रचार-प्रसार कर रहे है. आधुनिक राजनीति में एक शब्द धर्मनिरपेक्ष बहु प्रचलित हैं. चारों ओर से आवाजें उठती है कि राजनीति को धर्म निरपेक्ष होना चाहिए. सच पूछिये तो सेकुलर यानि सम्प्रदाय, इस अर्थ से तो किसी भी राज्य की राजनीति धर्म निरपेक्ष होनी चाहिए. किंतु आज सम्प्रदाय का जो अर्थ राजनेताओ द्वारा दिया जा रहा हैं उसे मान लेना चाहिए. आज कल के राजनेता सेकुलर का अर्थ धर्म विहीनता से लगाते हैं तो क्या राजनीति धर्म विहीन हो जानी चाहिये या उसमे धर्म का समावेश होना चाहिये.

मेरा मानना हैं कि जिस तरह समाज के अन्य लोगों के लिये धर्म का पालन आवश्यक हैं उसी प्रकार राजनेताओं के लिये धर्म का पालन आवश्यक है. हम धर्म को राजनीति से अलग नही कर सकते क्योंकि अपने (राजनीतिक) धर्म का पालन न करने से ही राजनीति आज पथभ्रष्ट हो गयी हैं और यही हाल रहा तो आगे भी गर्त में जायेगी. यहॉ पर धर्म का अर्थ मंदिर, मस्जिद, गिरिजाघर या अन्य धार्मिक स्थल या उनके सम्प्रदायों के पर्वतकों से नही है. वरन् एक आलौकिक शक्ति पर भरोसा कर अपने कर्तव्यों का करते जाने से हैं क्योंकि क्षेत्र चाहे भौतिक हो चाहे आध्यात्मिक कोई न कोई अलौकिक शाक्ति है जो हम सबको नियंत्रित करती है. कर्तव्यों के अलावा तमाम वें बातें जिनकों अपनाकर व्यक्ति अच्छा इंसान बनता है. यदि हम प्राचीन युगों पर दृष्टिपात करे तो पायेंगें कि पहले राजतन्त्र हुआ करते थे और प्रत्येक राज्य का अपना धर्म गुरू होता था जो राजा को समय-समय पर नीति सम्बन्धित ज्ञान देता था एवं जब कभी राजा गलत राह का अनुसरण करता था तो धर्म गुरू उन्हें धर्म और नीति की शिक्षा देकर सही मार्गदर्शन करता था. राजा को उनकी आज्ञा तक माननी पड़ती थी. त्रेता युग में भगवान राम के धर्म गुरू वशिष्ठ जी थे. द्वापर युग में आचार्य होते थे. जो धर्म गुरू ही थे. जैसेः-द्रोणाचार्य, कृपाचार्य आदि. यह सर्वविदित हैं कि दुर्योधन अपने गुरू व अन्य बड़ो की धर्म एवं नीति से संबंधित शिक्षा पर चला होता तो महाभारत का युद्ध न होता एवं कोरवों का विनाश न होता. क्या भगवान कृष्ण से बड़ा कोई राजनीतिज्ञ या कूटनीतिज्ञ हो सकता हैं? किंतु भगवान कृष्ण ने नीति एवं धर्म पर चलने वाले पाण्ड़वों का साथ दिया और यह प्रमाणित कर दिया कि राजनीति में धर्म अत्यन्त

आवश्यक है. इसका सबसे सटीक उदाहरण है भगवान श्री कृष्ण द्वारा युद्ध के मैदान में अर्जुन का 'गीता' का उपदेश देना. 'गीता' एक धार्मिक पुस्तक हैं क्योंकि उसमें करणीय (करने योग्य) बातें बतायी गई है.

किसी विचारक ने कहा भी है कि 'धर्म के बिना राजनीति अंधी और विज्ञान लंगड़ा हैं.' हम जानते है कि पहले शासन सुचारू रूप से इसीलिये चलतः था क्योंकि तब राजा धर्म पथ पर चलते थे. किन्तु जो धर्म से विचलित हुआ उसका विनाश हो गया. इतिहास उठाकर देखिये तो ऐसे अनगिनत उदाहरण भरे पड़े है. वर्तमान में राजनीति के पथनष्ट होने का यह एक महत्वपूर्ण कारण है क्योंकि धर्म को न अपनाकर अधर्म पूर्ण कार्य यही दर्शाते हैं कि आज के राजनेता इस पर विचार नही करते कि क्या सही है और क्या गलत है? उन्हें तो सिर्फ स्वार्थ ही दिखायी देता है. जिसकी पूर्ति हेतु वे गलत रास्ते पर चले जाते है. आज धर्म का अर्थ तो सिर्फ मंदिर, मस्जिद और सम्प्रदायों से लगाया जाता है जबकि हमारी संस्कृति तो सनातन है जो सभी धर्मो का आदर करना सिखाती है.

पहले धर्म का कार्य अंकुश लगाना भी होता था. किंतु आज ऐसा कोई अंकुश शासकों पर नही है. यही वजह है कि आज राजनीति का सही रूप कही खो गया है इसे प्राप्त करने के लिये इस बात पर ध्यान देना होगा कि करणीय और अकरणीय में अन्तर को समझने के लिये राजनीति में धर्म को सम्मिलित किया जाये तभी अनगिनत सामाजिक बुराइयों से हम स्वतः दूर हो जायेगे क्योंकि जब धर्म होगा तो लोग अच्छे होंगे और ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, कर्तव्यनिष्ठा जैसे गुण अपने आप लोगो में आ जायेगें जो देश के विकास में सहयोग देंगे. निम्नलिखित वाक्यों के साथ अपनी-अपनी लेखनी को विराम देना चाहूँगी.

सबकी सहायता करना और किसी का दिल न दुखाना ही सबसे बड़ा धर्म है.

विकसित देश और प्रदेश

■ हम उस प्रदेश के वासी है जहां बिजली कब जाती है इसका आभास हमें तब होता है, प्रतिदिन इनवर्टर टू टू करके बंद हो जाता है.

■ सड़के इतनी मजबूत और अच्छी बनती है कि बारहो माह कुछ न कुछ काम लगा रहता है.

■ कानून व्यवस्था इतनी चाक चौबन्द (यानि सख्त) है कि प्रतिदिन कितने मर्डर, बलात्कार, घर, दूकान एवं एटीएम लूटे जाते है कि गिनती करना मुश्किल होता है. जेलों में कैदी डर के मारे शराब की पार्टी करते हुए दिखाई देते है.

■ नकल पर इतनी सख्ती है कि कॉलेज में सीधे परीक्षा के दिन आने वाला छात्र भी प्रथम स्थान प्राप्त करता है, उड़न दस्ता सख्ती के लिए अपने नियत्रण कक्ष से निकलते है तो लेकिन पिकनिक मनाने, अगर कॉलेज तक पहुंच भी गये किसी तरह तो प्रधानाचार्य के कक्ष में काजू की बर्फी, गरम-गरम पकौड़े और लिफाफे देखकर ही उनको विश्वास हो जाता है कि यहां परीक्षा सुचारू रूप से चल रही है.

■ भर्तीया इतनी अधिक निकल रही है कि उनके लिए आवेदक कम पड़ने लगे है. जिनमें आवेदक मिल भी जाते है तो पेपर उनके घर पहुंचाने पड़ते है ताकि उन्हें उत्तर याद करने में कोई समस्या न हो.

■ कुछ भर्तियों में इतने आवेदक हो जाते है कि उन्हें 5–10 साल तक न्यायालय में ही नौकरी करनी पड़ जाती है,

बढ़ता हुआ सामाजिक विच्छेद और शिक्षा सरोकार

-डॉ०बी.आर.परमार 'हंसमुख'

परिवर्तन प्रकृति का बदस्तुर चलने वाला नियम है और विकास करना मानव की फ़ीदरत-जहाँ पर्वत, पहाड़, मैदान और घाटियाँ बनाकर प्रकृति ने धरती को सुंदरता प्रदान की वही मानव ने तरह-तरह के धंधे अपना कर जीवनभर व्यस्त रखने का यतन किया. कालचक्र घूमता रहा, मानव की आवश्यकता के अनुरूप धन्धों की संख्या भी बढ़ती गई. कालान्तर में मानव जंगल-गुफाओं को छोड़ मैदान में आया और कृषि करने लगा. कृषि युग में मानव ने एक सौम्य, सभ्य व सुंदर समाज की रचना की. सामाजिक रिस्तों का सूत्रपात किया. समाज में सब मिलजुल कर सुखशांति व समृद्धि से रहे. इनके लिए मूल्यों की स्थापना की. सभ्यता की सीढ़ी चढ़ते हुए प्रकृति के रहस्य के साथ ताल लय बैठाकर तीज-त्योहार-उत्सव रचे. सुदूर भाग की यात्रायें की और आख्यान गढ़े. मनोरंजन के लिए जनलोक नृत्य, गायन व स्वांग शैली तैयार की और इस तरह ज्ञान-विज्ञान व शिक्षा का सूत्रपात हुआ. तभी से शिक्षा-दीक्षा ज्ञान संप्रेष की परंपरा अनावरत रूप से चली आ रही है.

समय के साथ मानव क्रिया-कलाप में परिवर्तन होता गया. नये ज्ञान व नये उधम व उद्योग स्थापित किए. व्यापार का दायरा बढ़ा. मांग के अनुरूप उत्पादन किया जाने लगा. नौकरियों के अवसर गुणात्मक रूप से बढ़े. सेवा मूल्य में वृद्धि हुई. 21 वीं सदी आते आते यतायात-संचार के मध्यम की बाढ़ आ गई. दुनिया दिनों दिन छोटी होती गई. भौतिक साधनों का उपभोग जीवन का अनिवार्य अंग बन गया. तृतीयक एवं चतुर्थक कार्य का सैलाब उमड़ पड़ा. जीवन मुल्य बदल गए. परिवार चलाने के लिए अत्यधिक धन की जरूरत पड़ने लगी.

शिक्षित वर्ग की प्राथमिक एवं द्वितीयक कार्य में रुचि घटी. शिक्षा का स्तर बढ़ा, धन कमाने की होड़ में मनुष्य ऊहापोह की ज़िंदगी जीने लगा और इस आपाधापि ने आज के आदमी को मूल्य परख जीवन जीने से परे कर दिया! महगाई ने अपने तेवर क्रूर कर दिए, आधुनिकता की आड़ में मनुष्य का जीवन कृत्रिम हो गया. फलतः समाज में मूल्यों का पतन तेजी से हुआ, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक संस्थाओं का सोच निम्नत्तर होने के साथ साथ तत्कालीन लाभ के ईर्द-गिर्द घूमने लगा, शिक्षा, ज्ञान व विज्ञान ने जहाँ देश-कल को बहुत कुछ दिया वहीं आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक एवं धार्मिक असमानता के न केवल बीज-बोये अपितू उदारीकरण, नीजिकरण तथा वैश्वीकरण नाम की संकल्पना को जन्म दिया. इनके चलते समुचे मानव समाज में एक ऐसी चिंतन एवं कार्यशैली तैयार हुई जिसके चलते नकस्लवाद, अलगाववाद, आतंकवाद तथा क्रूर अपराध की आँधी को बल मिला. उच्चशिक्षा, नौकरी, प्रशिक्षण प्रवरजन, औधोगीकरण, नगरीकरण, पश्चिमीकरण, उत्तर आधुनिकता, परगमन, परित्याग, मद्धपान, आडंबर युक्त जीवनशैली निर्मित हुई. जिसके कारण भारतीय समाज में मूल्यों का ह्रस हुआ. मानव मूल्यों के अभाव में सामाजिक विच्छेद दिनों दिन बढते जा रहें हैं. अब मनुष्य एक सामाजिक प्राणी न रह कर एक आर्थिक प्राणी हो गया है. सामाजिक विच्छेद का दायरा दिनों दिन विस्तृत होता जा रहा है. न्यायालय में चल रहे तलाक के मामलों की संख्या से सिद्ध होता है कि पति- पत्नी का रिस्ता अब गुड्डे-गुड़ियों का खेल हो गया है. पति का सालों घर से दूर रहना भी सामाजिक विच्छेद की श्रेणी में आता है. पिता-पुत्र, भाई-भाई, भाई-बहन और बहन-बहन में मनमुटाव का स्तर इतना बढ़ गया है कि कोर्ट कचहरी में चल रहे दो तिहाई विवाद सामाजिक विच्छेद की ही देन है. खून के रिस्तेदारों में धोखाधड़ी व हत्या आम बात हो गयी है. पड़ोसी धर्म निभाना अब बीते दीनों की बात गयी है. समग्र रूप में निष्कर्ष निकाला जाए तो कहा जा सकता है की सामाजिक रिस्तों की अवधारणा बादल गयी है.

शिक्षा का स्तर बढ़ा, धन कमाने की होड़ में मनुष्य ऊहापोह की ज़िंदगी जीने लगा और इस आपाधापि ने आज के आदमी को मूल्य परख जीवन जीने से परे कर दिया! महगाई ने अपने तेवर क्रूर कर दिए, आधुनिकता की आड़ में मनुष्य का जीवन कृत्रिम हो गया.

सामाजिक जीवन के मायने एवं आयाम बदल का गए है. सामाजिक सरोकार का सोच बादल गए है और यहीं से शिक्षा सरोकार का चिंतन शुरू होता है. यह शिक्षा ही है जिसने आखेट अवस्था में जानवर सा जीवन जीने वाले आदमी को ज्ञान का शिखर पुरुष बनाया है. जब मानव अपनी आदिम अवस्था में था तो उसे संग्रहण की कला सिखाई और सर्दी, गर्मी और बारिश से बचने के उपाय सुझाए तथा गुफाओं में रहना सिखाया. बहू पत्नी व बहू पति की बुराइयाँ समाझाकर वफादार जीवनशैली और सुखमय दाम्पत्य जीवन की सीख दी. घर बनाने, कृषि करने तथा व्यापार की चिंतन शैली निर्मित की. कपड़े बुनने की कला सिखाई, हथियार बनाना सिखाया, प्राकृतिक बाधाओं पर विजय प्राप्त करने की कला सिखाई, यह शिक्षा ही है जिसके बल पर आज मानव दूर संवेदी ग्रह के मध्यम से धरती का कौन कौन नाप रहा है. चाँद-सूरज की थाह ले रहा है.

लेकिन कड़वे सत्य का उद्घाटन यह भी है कि आधुनिक युग में शिक्षा सरोकार में कमी आने के कारण सभ्य समाज शनैः शनैः पतन की राह पर चल पड़ा. सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक राजनीतिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का अवमूल्यन तेजी से हुआ. मानव मूल्य की शिक्षा के अभाव में मानव नें जाति, धर्म, समाज और रीति-रिवाज आदि पर कुर्तक करना सिखा लिया. लेकिन शाश्वत सत्य का उद्घाटन यह भी है कि वह शिक्षा ही होगी जो वर्तमान समाज में आई विकृति का युक्तियुक्त तरीके से खत्म कर पुनः सुसभ्य समाज की रचना करेगी.

-प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय, चनैनी जिला उधमपुर, जम्मू-कश्मीर

श्री नरेन्द्र मोदीः प्रधानमंत्री एवं उनका मंत्री मंडल

कैबिनेट मंत्रियों का विभाग

नाम	मंत्रालय
राजनाथ सिंह-	रक्षा मंत्री
अमित शाह	-गृह मंत्री
नितिन गडकरी	सड़क परिवहन

डी वी सदानंद गौड़ा-रसायन एवं उर्वरक
निर्मला सीतारमण -वित्त
राम विलास पासवान-उपभोक्ता एवं खाद्य
नरेंद्र सिंह तोमर-कृषि एवं ग्रामीण विकास
रवि शंकर प्रसाद- कानून एवं संचार
हरसिमरत कौर बादल-खाद्य प्रसंस्करण
थावरचंद गहलोत-सामाजिक न्याय
डा. एस. जयशंकर -विदेश मंत्री
रमेश पोखरियाल निशंक-मानव संसाधन
अर्जुन मुंडा-अनुसूचित जनजाति कल्याण
स्मृति इरानी- महिला, बाल विकास
डा. हर्षवर्धन-स्वास्थ्य एवं परिवार, विज्ञान
प्रकाश जावड़ेकर-पर्यावरण, सूचना-प्रसारण
पीयूष गोयल-रेलवे, वाणिज्य और उद्योग
धर्मेंद्र प्रधान-पेट्रोलियम, स्टील, नैचरल गैस
मुख्तार अब्बास नकवी-अल्पसंख्यक मामले
प्रहलाद जोशी-संसदीय कार्य, कोयला, खनन
डा. महेंद्र नाथ पांडे-स्किल डिवेलपमेंट
अरविंद सावंत- भारी उद्योग
गिरिराज सिंह-पशुपालन, डेयरी, मत्स्य पालन
गजेंद्र सिंह शेखावत -जल शक्ति

राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

संतोष कुमार गंगवार-श्रम और रोजगार
राव इंद्रजीत सिंह-सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन
श्रीपाद नाइक-आयुर्वेद, योग, आयुश व रक्षा राज्य मंत्री
डॉ. जितेंद्र सिंह- पूर्वोत्तर विकास, स्पेस, परमाणु ऊर्जा
किरण रिजिजू-युवा मामले, खेल और अल्पसंख्यक
प्रहलाद सिंह पटेल-संस्कृति और पर्यटन
आर के सिंह-बिजली, अक्षय ऊर्जा, स्किल डिवेलपमेंट
हरदीप सिंह पुरी- हाउसिंग ऐंड अर्बन अफेयर्स, सिविल ऐविएशन
मनसुख लाल मंडाविया-शिपिंग और रसायन व उर्वरक राज्य मंत्री

राज्य मंत्रियों के विभाग

फग्गन सिंह कुलस्ते-स्टील मंत्रालय
अष्विनी कुमार चौबे-स्वास्थ्य और परिवार कल्याण
अर्जुन राम मेघवाल-संसदीय कार्य मंत्री, भारी उद्योग
जनरल वीके सिंह- सड़क एवं परिवहन
कृष्णपाल गुर्जर-सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता
रावसाहेब दानवे-उपभोक्ता मंत्रालय
जी किशन रेड्डी- गृह मंत्रालय
पुरुषोत्तम रुपाला-कृषि, किसान कल्याण
रामदास आठवले- सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता
साध्वी निरंजन ज्योति-ग्रामीण विकास
बाबुल सुप्रियो-पर्यावरण, जंगल और जलवायु परिवर्तन
संजीव बालियान-पशुपालन, डेयरी, मत्स्य पालन
संजय धोत्रे- संचार
अनुराग ठाकुर-वित्त-कारपोरेट अफेयर्स
सुरेश अंगड़ी - रेलवे
नित्यानंद राय -गृह
रतन लाल कटारिया-जल शक्ति/सामाजिक न्याय अधिकारिता
वी. मुरलीधरन-विदेश/संसदीय कार्य
रेणुका सिंह सरुता-अनुसूचित जनजाति कल्याण
सोम प्रकाश-वाणिज्य एवं उद्योग
रामेश्वर तेली-खाद्य प्रसंस्करण
प्रताप सारंगी-सूक्ष्म एवं लघु उद्योग
कैलाश चौधरी-कृषि एवं किसान कल्याण
देबोश्री चौधरी-महिला एवं बाल विकास

मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम

-डॉ.आई.ए.मंसूरी शास्त्री

भारतीय संस्कृति के अद्वित्य प्रतिमान, मर्यादा के स्तम्भ हैं श्रीराम. अवध नरेश चक्रवर्ती सम्राट महाराजा दशरथ की तीन रानियां थीं कोशल की कौशल्या, मगध की सुमित्रा और कैकेय देश की कैकेयी थी. पूर्व जन्म में स्वयं भू महाराज मनु और सतरूपा ने नैमिषारण्य में घोर तपस्या किया था जिससे प्रसन्न होकर भगवान् प्रकट हुए थे और दोनों के इच्छानुसार अगले जन्म में इनके पुत्ररूप में आने का वरदान दिया था. श्रीराम महारानी कौशल्या के कनक भवन में प्रकट हुए थे, उस समय इनकी चार भुजाएं थी और विशाल रूप था. चारों हाथों में अस्त्र शस्त्र था. कौशल्या जी के आग्रह पर इन्होंने बालरूप धारण किया था. उस समय अयोध्या से सरयू नदी की दूरी डेढ़ योजन यानी 6 कोष अर्थात् 9 किमी थी.

श्रीराम ने मनुष्य रूप में जो आदर्श प्रस्तुत किया उसी को मर्यादा कहा गया. उन्होंने कुल रिति, नीति और सामाजिक व्यवहार के अनुसार आदर्श आचरण किया. राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त अपनी रचना साकेत में कहते हैं- ''राम, तुम्हारा वृत्त स्वयं ही काव्य है, कोई कवि बन जाय, सहज सम्भाव्य है।''

उर्दू के मशहूर शायर अल्लामा इकबाल जिन्हें 'शायरे मशरिक' भी कहते हैं, उन्होंने प्रभु रामचन्द्र जी की महानता को स्वीकार करते हुए राम को ''इमामे हिन्द'' कहा है. अल्लामा इकबाल कहते हैं-है राम के वजूद पे हिन्दोस्तां को नाज़/अहले नज़र समझते हैं उनको इमामे-हिन्द।

तुलसीदास ने स्वयं स्पष्ट किया है कि 'राम किसी धर्म विशेष तक सीमित नहीं हैं, अपितु वह समस्त जग में व्याप्त हैं.

प्रातकाल उठि कै रघुनाथा।
मातु पिता गुरू नावहिं माथा।।रा.मा.।।

अर्थात् प्रातःकाल उठकर श्रीराम अपनी माता, पिता और गुरू को सर्वप्रथम प्रणाम करते थे और उनकी आज्ञा लेकर ही राजकाज करते थे. वे तीनों माताओं को सम्मान रूप से मानते थे. मानव, पशु पक्षी, सजीव और निर्जीव सबका वे सम्मान करते थे. इसका उदाहरण है लंका पर चढ़ाई करते समय रास्ते के लिए लवणसागर की विनीत करना. वन में सबरी का जूठा बेर खाना, गिद्धराज जटायु का अपने पिता के समान अन्तिम संस्कार करना आदि.

श्रीराम में मर्यादा की पहचान और पारखी दृष्टि अद्‌भुत थी. बाल्यकाल में जब चारो भाई प्रातःकाल सरयू में स्नान करने जाते थे तो लक्ष्मण जी उनकी लगोटी साफ करने के बाद में घर आते थे. राम के चले आने के बाद मेघनाथ राक्षस उनसे मल युद्ध करता था. एक दिन लक्ष्मण ने इस बात को राम से बताया तो राम ने कहा कि जब वह मल युद्ध करे तो उसे मेरी लगोटी में बांध लेना, इससे उसकी मायावी ताकत समाप्त हो जायेगी और वह भाग नहीं पायेगा, उसे बांधकर दरबार में लाना. लक्ष्मण ने वैसा ही किया. जब राम स्नान करके वापस आ गये तो नदी से निकलकर वह राक्षस लक्ष्मण से मल युद्ध करने लगा. लक्ष्मण ने उसे लगोटी से बांध लिया और राज दरबार में लेकर आये. रास्ते में मेघनाथ ने लक्ष्मण का रूप धारण कर लिया. दरबार में यह देखकर सब लोग आश्चर्य करने लगे कि दोनों लक्ष्मण हैं, दशरथ भी चिन्ता में पड़ गये कि इनमें से कौन लक्ष्मण है और कौन राक्षस है. तब श्रीराम ने कहा कि मैं बताता हूं कि कौन लक्ष्मण है और कौन राक्षस है. राम दोनों के सामने ज्योंही खड़े हुए लक्ष्मण की नज़र नीचे हो गई परन्तु राक्षस राम की आंख में आंख मिलाकर देखता रहा, तब राम ने बताया कि यह राक्षस है. राम उस राक्षस का वध करने आगे बढ़े तभी दशरथ ने उन्हें ऐसा करने से मना कर दिया और राक्षस को छुड़वा दिया.

इसी बात को लेकर लंका युद्ध में लक्ष्मण को शक्ति बाण लगने पर विलाप करते हुए राम ने कहा था-

जो जनतेहु वन बन्धु विक्षोहु,
पिता बचन मनते नहीं ओहु।

राम कहते हैं कि यदि मैं जानता कि वन जाने पर और लंका में युद्ध होगा जिसमें मेघनाथ लक्ष्मण को शक्ति बाण मारेगा तो मैं अपने पिता कि उस वचन को नहीं मानता अर्थात् मेघनाथ को छोड़ता नहीं उसका वध कर देता. विश्वामित्र के साथ बक्सर जाते समय रास्ते में ताड़का का वध भी स्त्री होने के कारण नहीं करना चाहते थे परन्तु न चाहते हुए भी पिता कि वचन का पालन करने हेतु उन्होंने ताड़का का वध किया. विश्वमित्र को सौंपते समय दशरथ जी ने कहा था पुत्र राम इस आदेश को ''बेटा तुम पिता के कहने से पिता के वचनों का गौरव रखने के लिए कुशिकनन्दन विश्वामित्र की आज्ञा का निःशंक होकर पालन करना. कभी भी उनकी बात की अवहेलना न करना.'' रामने विश्वामित्र जी से कहा कि-मैं पिताजी के उस उपदेश को सुनकर आप ब्राह्मणवादी महात्मा की आज्ञा से ताड़का वध सम्बन्धी कार्य को उत्तम मानकर करूंगा, इसमें संदेह नहीं है. 'गौ, ब्राह्मण तथा समूचे देश का हित करने के लिए मैं आप जैसे अनुपम प्रभावशाली महात्मा के आदेश का पालन करने को सब प्रकार से तैयार हूं. उसके बाद राम ने शब्दीवेदी बाण से ताड़का का वध कर दिया. राम के पास शब्द वेदी वाण था.

धनुष यज्ञ के लिए जनकपुरी जाते समय रास्ते में गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या का उद्धार किया. जनकपुरी जाकर शिव जी के पिनाक धनुष को तोड़ा.

(जो धनुष किसी बलशाली राजा से उठी तक नहीं) राम ने उस धनुष को इतना तान दिया कि वह वज्र के समान भयंकर शब्द करते हुए कड़कड़ा कर टूट गया, मानो उसने महाक्रोधी परशुराम को सूचना दे दी कि क्षत्रियों ने अब पुनः शिर उठाना आरंभ कर दिया है. क्रोधी परशुराम जब सूचना पाकर जनकपुरी से अयोध्या जाते समय रास्ते में राम से पूछते हैं कि धनुष किसने तोड़ी है तो राम ने विनय पूर्वक हाथ जोड़कर उनसे कहा-

नाथ संभुधनु भंजनिहारा।
होइहि कोउ एक दास तुम्हारा।।रा.मा.

'गौ, ब्राह्मण तथा समूचे देश का हित करने के लिए मैं आप जैसे अनुपम प्रभावशाली महात्मा के आदेश का पालन करने को सब प्रकार से तैयार हूं।

परशुराम जी कहते हैं- देखो राम! युद्ध तो पीछे होगा, पहले तुम मेरे इस धनुष पर डोरी चढ़ाकर इसे बाण के साथ खींचों तो सही, यदि तुम इतना भी कर लोगे तो मैं समझूंगा कि तुम मेरे ही समान बलवान हो और मैं इतने से ही अपनी हार मानकर लौट जाऊंगा।

तेन भूमिनिहितैक कोटि तत्कार्मुकं च बलिनाऽधिरोपितम्।
निष्प्रभवश्च रिपुरास भूभृतां धूमशेष इव धूमकेतनः।।रघु वं.११-८१।।

बलवान् राम ने उस(परशुराम की) धनुष की एक छोर पृथ्वी पर टेक कर ज्योंही उस पर डोरी चढ़ाई त्योंही क्षत्रियों के शत्रु परशुराम जी उस अग्नि के समान निस्तेज हो गये जिसमें केवल धूंआ भर रह गया हो. परशुराम के निस्तेज हो जाने के बाद राम ने कहा-न प्रहर्तुमलमस्मि निर्दयंविप्र इत्याभिभवत्यपि त्वयि।
शंसकिंगतिमनेन परित्रणा हन्मिलोकमुतते मखार्जितम्।। रघुवं.११-८४।।

यद्यपि आपने मेरा अपमान किया है किन्तु आप ब्राह्मण हैं, इसलिए मैं निर्दय होकर आपको नहीं मारूंगा. यह आप बताइए कि अब इस बाण से मैं आपकी गति रोक दूं या आपका उन दिव्य लोकों में पहुंचने की शक्ति रोक दूं जिसे आपने यज्ञ करके अर्जित किया है. परशुराम जी ने कहा-हे बुद्धिमानों में श्रेष्ठ! आप मेरी अभिलाषित गति न रोकिए जिससे मैं पुण्य तीर्थों में जा सकूं, मुझे भोग की तो इच्छा है नहीं, इसलिए यदि मुझे स्वर्ग न भी मिले तो कुछ दुःख नहीं होगा. अतः आप स्वच्छगति को बचाकर मेरे स्वर्ग लोक को ही अपने अमोघ बाण से नष्ट कीजिए.

राम ने परशुराम जी का कहना मान लिया और पूर्वाभिमुख होकर बाण छोड़ दिया. यद्यपि परशुराम जी ने बहुत पुण्य किया था फिर भी वह बाण सदा के लिए उनके स्वर्ग का प्रतिरोधक बन गया. इसके बाद राम ने महा तपस्वी परशुराम जी से क्षमा मांगते हुए उनके दोनों चरणों का स्पर्श कर प्रणाम किया, क्योंकि जब कोई पराक्रमी वीर अपने पराक्रम से अपने शत्रु को पराजित कर देता है तब यदि वह नम्रता भी दिखाता है तो उसकी कीर्ति ही बढ़ती है.

इस प्रकार राम ने परशुराम को दण्डित कर उनका उपकार ही किया. उनके क्षत्रिय माता से प्राप्त उनके रजोगुण को दूर करके उन्हें ब्राह्मणोचित पिता का सतोगुण उन्हें प्रदान किया.

पित्रा दतां रूदन्रामः प्रांमही प्रत्यपद्यत।/प्रश्चाद्वनाय गच्छेति तदाज्ञां मुदीतोऽग्रहीत्।। रघुवं.१२-७।।

अर्थात् जिस समय राजा दशरथ राम को राज्य गद्दी प्रदान कर रहे थे उस समय उन्होंने रोते हुए उसे स्वीकार किया था, पर जब उनसे कहा गया कि वन चले जाओ, तब इस आज्ञा को हंसते-हंसते सिर चढ़ा लिया था. राम के मुख पर राज्याभिषेक के वस्त्र पहनते हुए जो भाव था ठीक वैसे ही वन जाते समय वल्कल वस्त्र पहनते हुए था अर्थात् राम के मुख पर हर्ष या शोक का भाव नहीं था. राम के वन चले जाने के बाद राजा दशरथ की मृत्यु हो जाती है. भरत को ननिहाल से बुलाया जाता है.

अयोध्या आने पर उन्हें पिता के स्वर्गवासी होने की सूचना मिलती है तो वे (भरत) अपनी तीनों माताओं और गुरू के साथ सेना लेकर राम से मिलने के लिए चित्रकूट की ओर निकल पड़ते हैं. चित्रकूट में रामको भरत से अपने पिता दशरथ की मृत्यु की सूचना मिलती है. भरत राम को अयोध्या वापस चलने और अयोध्या की राज्य गद्दी संभालने की प्रार्थना करते हैं, परन्तु राम पिता के बचन का पालन करने के लिए भरत के आग्रह को ठुकरा देते हैं. उसके बाद भरत द्वारा उनकी चरण पादुका की मांग की जाती है जिसे राम दे कर उन्हें वापस अयोध्या भेज देते हैं.

जिस समय राजा दशरथ राम को राज्य गद्दी प्रदान कर रहे थे उस समय उन्होंने रोते हुए उसे स्वीकार किया था, पर जब उनसे कहा गया कि वन चले जाओ, तब इस आज्ञा को हंसते-हंसते सिर चढ़ा लिया था. राम के मुख पर राज्याभिषेक के वस्त्र पहनते हुए जो भाव था ठीक वैसे ही वन जाते समय वल्कल वस्त्र पहनते हुए.

राम ने पति धर्म का भी पालन किया. चित्रकूट में जब सीता जी के स्तन पर इन्द्र के पुत्र जयन्त ने कौआ का रूप धारण कर चोच से प्रहार किया तो राम ने सींक के बाण का प्रहार कर उसकी एक आंख छिन लिया. उसके बाद राम ने चित्रकूट आश्रम को इसलिए छोड़ दिया कि वह अयोध्या से निकट था. अत्रिऋषि के अश्रम में विराध नामक राक्षस ने राम और लक्ष्मण के बीच से सीता का हरण कर लिया. तब राम और लक्ष्मण ने उस राक्षस का बद्ध कर दिया. उस राक्षस के शव को मारने के बाद जमीन में गाड़ दिया ताकि शव के सड़ने के बाद दुर्गन्ध न फैले. इसके बाद कामातुर शूर्पणखा वहां पहुंच गई और राम से विवाह का प्रस्ताव रखी. विरोध करने पर उसने सीता जी को अपना सूप जैसा नाखून दिखाकर डराने लगी. तब राम के इशारे पर लक्ष्मण ने उसकी नाक काट ली. श्रीराम का मायावी रूप उस समय देखने को मिला जब शूर्पणखा का नाक काटने के बाद खर दूषण और त्रिशिरा राक्षसों ने बड़ी राक्षसी सेना के साथ राम से बदला लेने के लिए उनसे युद्ध किये.

एको दाशरथिः कामं यातुधानाः सहस्रराः।
ते तु यावन्त एवाजौ तावांश्च ददृशेषतैः।।
रघुवं. 12—45 ।।

अर्थात्-यद्यपि राम अकेले थे और राक्षस हजारों थे, पर राम इस प्रकार लड़ रहे थे कि वहां जितने राक्षस थे उन्हें उतने ही राम दिखाई पड़ रहे थे. इस युद्ध में राक्षसी सेना सहित खर दूषण और त्रिशिरा सभी मारे गये. राम द्वारा इन राक्षसों के मारे जाने और अपनी नाक कटने की सूचना जब शूर्पणखा ने लंका जाकर लंकापति रावण को दी तो रावण ने प्रतिशोध की भावना से मारीच को माया से स्वर्णमृग बनाकर और राम और लक्ष्मण को धोखा देकर सीता का हरण कर लिया. सीता जी को रावण द्वारा हरण कर लंका ले जाते समय रास्ते में गिद्धराज जटायु द्वारा सीता जी को छुड़ाने का प्रयास किया गया. जटायु ने रावण पर आक्रमण किया. रावण ने तलवार से जटायु के दोनों पंख काट कर उसे घायल कर दिया.

सीता जी की खोज में निकले राम और लक्ष्मण वन-वन भटक रहे थे, पशु, पक्षियों और जंगली जानवरों से राम सीता के बारे में पूछ रहे थे, तभी रास्ते में उन्हें घायल जटायु मिला. जटायु ने रावण द्वारा सीता का हरण कर लेजाने की बात बताते हुए राम की गोद में ही दम तोड़ दिया. जटायु राजा दशरथ के मित्र थे. जटायु की मृत्यु से दोनों भाईयों को उतना ही शोक हुआ जितना की अपने पिता दशरथ के मरने पर हुआ था. राम और लक्ष्मण ने जटायु का विधिवत दाह संस्कार किया और पिता के समान ही उन्होंने उनका प्रेतादि कर्म किया.

श्रीराम को उस कैकेयी माता से कोई द्वेष या घृणा नहीं थी जिसने उन्हें 14 वर्षो के लिए वनवास दिया था. जब लंका विजय के बाद राम अयोध्या पहुंचे और अपने पिता के कमरे में गये तो वहां माता कैकेयी उदास होकर बैठी थी. वे माता कैकेयी से मिलते हैं.

कृतांजलिस्तत्र यदम्ब सत्यान्नाभ्रष्यत स्वर्गफलादगुरूर्नः।/तच्चिन्त्यमानं सुकृतं भवेति जहार लज्जां भरतस्य मातुः।। रघुवं. 14–16।।

यानी कैकेयी (दशरथ के घर में) वहां उदास होकर बैठी हुई थी, राम ने हाथ जोड़कर उससे कहा- "मां तुम्हारे ही पुण्य के प्रताप से हमारे पिता जी अपने उस सत्य से नहीं डिगे, जिससे स्वर्ग मिलता है. यदि आप उनसे वरदान न मांगती तो उनकी वरदान देने की प्रतिज्ञा झूठी हो जाती." यह सुनकर कैकेयी की आत्मग्लानि जाती रही.

इस प्रकार राम पिता की आज्ञा से वनवास की अवधि बिताकर वे अपने पिता के राज्य पुनः पाये. जिस प्रकार धर्म, अर्थ और काम के साथ समान व्यवहार करते थे, उसी प्रकार अपने भईयों के साथ भी समान प्रेम का व्यवहार करते थे. राम निर्लोभ थे, इसलिए उन्होंने अपनी प्रजा पर किसी प्रकार का कर नहीं लगाया. फल यह हुआ कि थोड़े दिनों में प्रजा धनी हो गई. वे कहीं भी विध्न नहीं आने देते थे. विपत्ति पड़ने पर वे सबकी सहायता करते थे. इसलिए सभी लोग प्रसन्नता से यज्ञादि कर्म करने लगे. वे अच्छे और सही मार्ग पर सबको चलाते थे, इसलिए वे पुत्रवान् भी थे. इक्षुवाकु वंशी राजाओं के राज्य में किसी की भी अकाल मृत्यु नहीं होती थी. वे ठीक समय पर प्रजा का कार्य किया करते थे, इसलिए सभी उनको पिता के समान मानते थे.

राम अपनी मित्र मण्डली के साथ हास्य व्यंग्य भी किया करते थे. एक बार उन्होंने अपने मित्र और गुप्तचर भद्रमुख से पूछा-कहो भद्र! मेरे विषय में प्रजा क्या कहती है? पहले तो वह चुप रहा, परन्तु राम के बार-बार पूछने पर उसने कहा-हे मानवदेव/ प्रजा आपकी सब बातों की प्रशंसा करती है किन्तु आपने राक्षस राज रावण के घर में रहने वाली सीता को पुनः ग्रहण कर लिया, इसे प्रजा अच्छा नहीं समझती है. इस प्रकार अपनी पत्नी पर लगाये गये इस भीषण कलंक को सुनकर राम का हृदय वैसे ही फट गया जैसे घन की चोट से तपाया हुआ लोहा फट जाता है. यह जानते हुए कि सीता पवित्र और निर्दोष हैं उन्हें गर्भवती सीता का त्याग करना पड़ा.

दाराशिकोह ने कहा है 'ऐ सीते तेरे शरीर पर जो वस्त्र है वह भी तेरे पवित्र शरीर को नहीं देख सकते जैसे आत्मा शरीर के भीतर है वह शरीर को नहीं देख सकते. संसार में नारी जाति पर ऐसा सुन्दर उच्चकोटि का चित्रण किसी भाषा के मनीषी ने नहीं किया.

ऐ सीते तेरे शरीर पर जो वस्त्र है वह भी तेरे पवित्र शरीर को नहीं देख सकते जैसे आत्मा शरीर के भीतर है वह शरीर को नहीं देख सकते. संसार में नारी जाति पर ऐसा सुन्दर उच्चकोटि का चित्रण किसी भाषा के मनीषी ने नहीं किया.

राम अपने भाईयों से कहते हैं 'मैं जानता हूं कि सीता निर्दोष हैं पर लोक निन्दा को मैं सत्य से भी बड़ा मानता हूं, देखो निर्मल चन्द्रविम्ब के ऊपर पड़ी हुई पृथ्वी की छाया को लोग चन्द्रमा का कलंक कहते हैं और असत्य होने पर भी सारा संसार उसे सत्य मानता है. राम के आदेश पर लक्ष्मण गर्भिणी सीता जी को वन में लेजाकर बाल्मीकि जी के आश्रम के निकट छोड़ देते हैं.

राम के राज्य में अल्प मृत्यु, किसी प्रकार का दुःख या रोग नहीं होता था. सभी स्वथ्य और प्रसन्न रहते थे. दैहिक, दैविक या भौतिक किसी प्रकार की कोई परेशनी किसी को नहीं होती थी. एक बार एक ब्राह्मण राम के दरबार में अपने मरे हुए पुत्र का शव लेकर आया और राजद्वार पर रखकर फूट-फूट कर रोने लगा. वह कहने लगा कि हे वसुधे! तुम दशरथ से हीन होकर राम के हाथ में पड़कर दयनीय दशा को प्राप्त हो गई हो. इससे बढ़कर क्या कष्ट हो सकता है. प्रजापालक भक्त वत्सल श्रीराम ने जब उसके शोक की बात सुनी, तब उन्हें बड़ी लज्जा आई, क्योंकि इक्ष्वाकु वंशी राजाओं के राज्य में किसी कि अकाल मृत्यु नहीं होती थी अर्थात् पिता के सामने पुत्र की और बड़ों के रहते छोटों की मृत्यु नहीं होती थी. राम ने उस दृःखी ब्राह्मण को यह आश्वासन दिया कि आप क्षमा करें और थोड़ी देर तक ठहरिये. मैं अभी आपके शोक को दूर करता हूं. यह कहकर यमराज को जीतने के लिए उन्होंने पुष्पक विमान का स्मरण किया. पुष्पक विमान आ गया. जब राम उस विमान पर अस्त्र शस्त्र लेकर बैठ कर चलने लगे तब उनके सामने आकाशवाणी हुई- हे राजन! आपकी प्रजाओं में कुछ वर्ण आश्रम धर्म के प्रति प्रतिकूल व्यवहार हो रहा है, उसका पता लगाकर दूर कीजिए, तभी आपका उद्देश्यपूर्ण होगा. तब राम पुष्पक विमान से यह देखने के लिए दिशाओं में घुमने लगे. घुमते-घुमतें राम ने देखा कि एक वृक्ष की शाखा पर उलटा लटका हुआ एक मनुष्य नीचे जलती हुई अग्नि के धूआं को

पी-पीकर तप कर रहा है और धूआं लगने से उसकी आंखें लाल हो गई हैं. राम ने उससे पूछा-आप किस वंश में उत्पन्न हुए हैं और आपका क्या नाम है? आप ऐसा तप क्यों कर रहे हैं? तब वह तपस्वी बोला-मैं स्वर्ग पाने के लिए तप कर रहा हूं, मेरा नाम शम्बूक है और मैं शूद्र हूं.

मनु महराज के वर्णाश्रम व्यवस्था के अनुसार शूद्रों को तप करने का अधिकार नहीं है-

शूद्रो को तपस्या करने का अधिकार नहीं है. इसी अनधिकृत कार्य से प्रजा में पाप फैलता है. इसलिए राम ने निश्चय कर लिया कि इसका वध करना ही होगा और उन्होंने हाथ में अस्त्र उठा लिया तथा शम्बूक का शिर उसी प्रकार काट कर गले से अलग कर दिया जिस प्रकार कमल डण्ठल से उतार कर पृथक कर दिया गया हो. राम से दण्ड पाने के कारण शम्बूक को वह गति मिल गई जो वह अपनी कठोर तपस्या से कभी नहीं पा सकता था, जिसे वह वर्णाश्रम धर्म का उलंघन करके पाना चाह रहा था.

इधर राम के अयोध्या पहुंचने के पूर्व ही वह ब्राह्मण पुत्र जी उठा. अन्त में एक दिन मुनि का वेश धारण काल आया और उन्हें अकेले में ले जाकर कहा कि- ब्रह्ममा जी ने आदेश दिया है कि अब आप चलकर बैकुण्ठ में रहें. इसके बाद राम उत्तरायण की ओर चले जिनके पीछे प्रजा थी. सरयू में जाकर राम एक विमान पर चढ़कर स्वर्ग चले गये तथा सरयू को उन्होंने अपने पीछे चलने वालों के लिए स्वर्ग की सीढ़ी बना दिया. अर्थात् जो सरयू में स्नान करता था वह तत्काल स्वर्ग चला जाता था. रघुवंश के अन्तिम राजा अग्निवर्ण थे.

(लेखक भाग्य दर्पण के संपादक हैं)
मो. 9450446301

प्रविष्टियां आमंत्रित है

काव्य के क्षेत्र में: कैलाश गौतम सम्मान-(हास्य/व्यंग्य रचना), स्व.किशोरी लाल सम्मान (श्रृंगार रस की एक रचना पर), महादेवी वर्मा सम्मान (छायावादी रचना पर) **गद्य के क्षेत्र में:** डॉ. रामकुमार वर्मा सम्मान (नाटक) उपेन्द्र नाथ अश्क सम्मान (कहॉनी/उपन्यास/लघु कथा) **हिन्दी सेवी सम्मान**-ऐसे व्यक्ति जो किसी भी प्रकार से हिन्दी सेवा कर रहे हों अथवा हिन्दी का प्रचार/प्रसार, हिन्दी के विकास के लिए कार्य कर रहे हों। **समाज सेवा के क्षेत्र में:** समदर्शी पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान-ऐसे व्यक्ति जो कम से कम गत 5 वर्षो से समाज सेवा में उल्लेखनीय योगदान दे रहे है. **कलाश्री:** (कला/संस्कृति/लोकनृत्य/शास्त्रीय संगीत/अभिनय/संगीत/पेंटिग, नृत्य आदि के क्षेत्र में उत्कृष्ठ योगदान के लिए), **राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान/राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान** -(हिन्दी सेवा के साथ-साथ किसी अन्य क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, प्रमाणिक विवरण) (युवाओं की उम्र 35 वर्ष से कम हो) **विशेष:** १. प्रविष्टि के साथ सम्बन्धित विधा की एक रचना, विवरण के सम्बंध में प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में तथा एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका और 150 रुपये मात्र का धनादेश/डाक टिकट आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा. २.रचनाएं व सहयोग राशि लौटाई नहीं जाएँगी. ३. निर्णायंक मण्डल का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा. किसी प्रकार के विवाद के सदर्भ में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद होगा. अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

अंतिम तिथि: 30 नवम्बर 2019

अध्यक्ष,
श्री पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति न्यास
65ए/2, लक्सों कंपनी के सामने, रामचन्द्र मिशन रोड,
धूमनगंज, इलाहाबाद-211011, उ.प्र.,
मो०: 09335155949, ईमेल-psdiit@rediffmail.com

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

हिन्दी मासिक

एल.आई.जी—93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद—211011, मो0: 9335155949

एक प्रति—15/रुपये, वार्षिक—150/रुपये,
पंचवर्षीय—700/रुपये, आजीवन—2100/रुपये

भय, कानून का

-डॉ० विदूषी शर्मा, नई दिल्ली

आज बात करते हैं भय की, कानून के भय की. आज अखबार के मुख्य पृष्ठ पर ही यह खबर थी कि एक शख्स ने दूसरे शख्स को केवल गाड़ी ठीक से चलाने की नसीहत दी तो उन्होंने उसे गोली मार दी. उस इंसान की मदद को कोई नहीं आया. परिणाम, उसकी मौत मौत हो गई. (विनोद मेहरा, 48 वर्ष जी टी करनाल रोड भलस्वा फ्लाईओवर) घर से जब किसी की असामयिक मृत्यु हो जाती है तो उस परिवार पर क्या बीतती है, यह सब शब्दों में बयान कर पाना मुश्किल है क्योंकि यह ऐसा दर्द है जो उसके परिवार को, उस शख्स से जुड़े हर इंसान को जिंदगी भर झेलना पड़ता है. कई लोग यहां सोचेंगे कि यह खबर तो पुरानी है. तो हफ्ते, 10 दिन में किसी की जिंदगी नहीं बदलती. जिस घर से एक इंसान की मौत हुई है 10 दिन में उनका कुछ भी नहीं बदलता और जिंदगी की असलियत सामने आने लगती है. और खुदा ना खास्ता यदि वह इंसान पूरे घर का इकलौता ही कमाने वाला हो तो 10 दिन में नजारे दिखाई देने लग जाते हैं. कौन अपना है कौन पराया है, सब की पहचान हो जाती है. खैर यह बात हुई भावनाओं की. और भी तरह-तरह की खबरें देख कर मन बहुत उद्वेलित, खिन्न और परेशान हो जाता है. रोज़ ही अखबार इस तरह की खबरों से भरा पड़ा है. कहीं बलात्कार, कहीं डकैती, छोटी-छोटी बच्चियों की जिंदगी खराब हो रही है, घर के चिराग बुझ रहे हैं कहीं कमाने वाले जिस पर पूरे परिवार की जिम्मेदारी है उसी को मौत के घाट उतारा जा रहा है, बिना कुछ सोचे-समझे कि इसके बाद इसके परिवार का क्या होगा? यह सब देखकर दिल बहुत परेशान हो जाता है. मेरे मन में यह सब देख कर बहुत से सवाल खड़े हो जाते हैं. क्यों हमारे भारत में ही ऐसा सब कुछ है कि यह लोग एक जुर्म करने के बाद इतनी जल्दी दूसरा जुर्म करने को तैयार हो जाते हैं? क्यों उन्हें कानून का डर नहीं है? इतनी जल्दी लोग कानूनों का उल्लंघन क्यों करते हैं? चाहे वह 8 महीने की बच्ची से बलात्कार की घटना ही क्यों न हो?

नित नई खबरें रोज देखकर, पढ़कर मन परेशान हो जाता है. मैं यह नहीं कहती कि पुलिस अपना काम सही ढंग से नहीं कर रही. बल्कि आज ही अखबार में 2 दिन से लापता एक बच्चे को सुरक्षित निकालकर पुलिस ने एक परिवार को क्या दिया है, उस परिवार को क्या मिला है, यह शायद सिर्फ महसूस करने की चीज़ है. पुलिस, प्रशासन अपना काम कर रहे हैं. लेकिन अपराध, जुर्म और जनसंख्या इतना अधिक बढ़ते जा रहे हैं कि हम सब की भी जिम्मेदारी बनती है, अब कुछ करने के लिए. समाज को सुरक्षित करने के लिए हमें भी कुछ करना होगा.

जब तक कानून का डर नहीं होगा, तब तक कानून का पालन नहीं होगा. लोग जुर्म करने से जब तक डरेंगे नहीं, तब तक वह ऐसा करते रहेंगे. परंतु सवाल यह उठता है कि लोग आसानी से कोई भी अपराध इतनी जल्दी क्यों कर लेते हैं? क्योंकि हमारे यहां कानून में लोचशीलता है, सिस्टम में ढिलाई है, देरी है. इसलिए लोग इतने बेखौफ हैं.

बल्कि दूसरे देश में इतने कड़े नियम बनाए गए हैं और इतनी कड़ाई से नियमों का पालन भी किया और करवाया जाता है कि जबरदस्ती कानून और व्यवस्था बनी रहती है और धीरे-धीरे लोगों को इसकी आदत पड़ जाती है. हमारे यहां भारत में कानून का 'डर' होना चाहिए या यूं कहें कि कानून का आतंक होना चाहिए तभी अपराधों में कमी हो पाएगी. **'भय बिन होइ न प्रीति।'**

कानून को कानून की तरह नहीं मानेंगे तो कुछ नहीं होने वाला. चाहे ट्रैफिक से संबंधित कानूनों से लेकर अपराधिक प्रकार के कानून ही क्यों न हो. मैं जानती हूं कि सब लोग इस बारे में बातें करते रहते हैं. परंतु बातें करने से कुछ नहीं होगा. सरकार को कानून सख्त बनाने होंगे. हम सब की भी कुछ जिम्मेदारी है. सब कुछ सरकार पर ही नहीं थोपना चाहिए और अपनी जिम्मेदारियों से पीछा नहीं छुड़ाना चाहिए. हम सब भी अपने स्तर पर कानून का दिल से पालन करें. और अपने बच्चों को शुरू से ही अनुशासन का महत्व बताएं (वरना इस उम्र में यदि कोई नसीहत दी जाएगी तो परिणाम घातक सिद्ध हो सकते हैं)।

इसलिए एक जिम्मेदार नागरिक होते हुए नई पीढ़ी को आरंभ से ही नैतिकता, अनुशासन, कानून का पाठ पढाना होगा.

सवाल राष्ट्र भाषा का?

राजनीति से परे विचार?

-डॉ० बालाराम परमार,
जम्मू कश्मीर

भारत को आजाद हुए सात दशक हो गए हैं लेकिन हिंदी को हृदय से राष्ट्र भाषा स्वीकार करने का सवाल ज्यों का त्यों बना हुआ है. राष्ट्र को एक भाग से दूसरे भाग तक जोड़ने के लिए सड़क एवं रेल मार्ग बन गए लेकिन भाषा के माध्यम से जोड़ने का मार्ग निर्माणाधीन ही है? जितना अधिक साहित्य में भाषाई एकता का बखान मिलाता है उतनी भाषाई एकता धरातल पर है नहीं. वास्तविकता कुछ और ही बयान करती है. पिछले दशकों में देश के अधिकांश क्षेत्रों में आशातीत एवं अतुलनीय प्रगतिशील कदम बढ़े-उठे हैं लेकिन जन-जन के हृदय को जोड़ने वाली राष्ट्र भाषा के सड़क-रेलमार्ग का शिलान्यास अभी बाकी है. ऐसा कहने-लिखने के अकाट्य कारण प्रमाण के साथ मौजुद भी है और सबको दिखाई भी देता है. बस जरुरत है अहिन्दी भाषा-भाषी राज्यों के वाशिंदों के हृदय से हिंदी भाषा के प्रति उनके मन में विद्वेष अथवा डर का भाव बना हुआ है उसे दूर करने का. पूर्वोत्तर राज्यों के वाशिंदों ने अनमने मन से ही सही, हिन्दी को हृदय में बसा लिया है. दक्षिण भारत के वाशिंदों के हृदय में हिंदी को स्वीकार करने में हिचकिचाहट और डर है. उन्हें डर है कि यदि हम हिंदी को बोलचाल की भाषा के रूप में अपनाते हैं तो हमारी अपनी द्रविड़ियन संस्कृति-सभ्यता, रहन-सहन तथा खान-पान पर प्रभाव पड़ेगा? इस प्रकार का सवाल एवं अस्वीकारोक्ति स्वाभाविक है और अपनी जगह सत्य भी!

क्योंकि हिंदी भाषा-भाषीयों द्वारा भी ऐसे संकेत नहीं दिए हैं कि वे भी द्रविड़ भाषा परिवार की भाषा-बोली को हृदय से आत्मसात करेंगें? यदि दक्षिण भारत के द्रविड़ भाषा-भाषी और उत्तर भारत में हिंदी भाषा-भाषी लोग राजनीति से परे राष्ट्रभाषा के सवाल का उत्तर खोजने में सफल होते हैं और हिंदी को वृहद राष्ट्रहित एवं भाषाई भेद-भाव व लड़ाई को समूल रूप में दफ़न करने के उद्देश्य से हृदयंगम करते हैं तो यह द्रविड़ भाषा परिवार के लोगों द्वारा आजादी के बाद का भारत माँ को दिया गया सबसे बड़ा और नायाब तोहफा निरुपित होगा.

असल में आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों, एक न एक दिन भारत की राष्ट्र भाषा तो होगी ही? देश तो देश है, युगों युगों तक एकता और अखंडता तो बनी ही रहेगी. देश में विकास की धारा तो बहेगी. नए-नए व्यक्तिगत, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक उन्नति के आयाम तो जुड़ेगें ही जुड़ेगें. एक भारत श्रेष्ठ भारत तो बनना-बनाना तय है. देश तो जन-जन का देश है. भारत देश न तो किसी धर्म का है न किसी वर्ग का? यह भारत न तो उत्तर भारत है न दक्षिण भारत? भारत तो भारतीयों का है. अब इस धरा पर 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' सोच की ही स्वीकार्यता, मान्यता एवं ग्राहम्यता होगी और होनी ही चाहिए. इस दृष्टिकोंण से राजनीति से परे विचार करें तो भारत में हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप स्वीकार्यता कई मायने में महत्वपूर्ण है. भारतमाता को सबसे नायाब तोहफ़ा यह होगा कि उसकी संतान जो कई दसक से उत्तर-दक्षिण का कागरुसी राग अलाप रहें हैं, बंद कर 'हम सब भारतीय हैं' का एकता राग छेड़ना शुरू कर देगें. भाषा-प्रान्त का झगड़ा बंद तो विकास की गंगा-कावेरी अविरल धारा शुरु! विकास की धारा गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, हताशा, निराशा, अवसाद, दंगा-फसाद जैसी सब बिमारियों-लाचारियों को बहा कर गर्त में दफ़न कर देगी और नौजवानों में 'नया भारत, श्रेष्ठ भारत'; 'हमारा भारत, अतुल्य भारत'; 'भारतीयों का भारत, कर्मवीरों-धर्मवीरों का भारत' और 'अपना भारत, सारे जहां से अच्छा भारत' रचने, गढ़ने का ज़ोश भरेगी. असल में ऐसे ही भारत की कल्पना हमारे स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की थी. हम 125 करोड़ लोग अपने हिसाब से जिसे भी अपना अगुआ, हितेषी, मसीहा, उद्धारक, हमारी जाति-भाषा का, हमारे क्षेत्र का जिस किसी भी हिसाब से माने, उन सब की इच्छा और कामना यही थी कि हमारी आने वाली पीढ़ी सुखमयी जीवन जीये. दिन दुगुनी और रात चौगुनी उन्नति करे. अब वक्त आ गया है कि भारतवंशी ठण्डे दिमाग से राजनीति से परे विचार करें कि जिन्हें हम नित श्रध्दा-सुमन चढ़ाते हैं उनकी इच्छाओ का कितना आदर करते हैं? क्या यही हिंदी का देखा हुआ वह सपना है जो संविधान सभा ने देखा था?

हिन्दीतर भाषी रचनाकारः

ॐ नमः शिवाय

-विजय कुमार सम्पत्ति,
सिकंदराबाद, तेलांगना

भाग-11

भगवान शिव ने उन्मत की भांति सती के जले हुए शरीर को कंधे पर रख लिया. वे सभी दिशाओं में भ्रमण करने लगे. शिव ने सती का शव बाँहों में उठा लिया और दूसरी बार तीव्र अभिलाषा से भर उठे, पहली बार अभिलाषा तब जगी जब सती मर गयी थी और फिर जब सती मरी नहीं थी. सती की ढीली बाँहें इधर-उधर लटक रही थीं. उनके पीछे और नीचे टकराती हुई. शिव की आँखों से आग और तेजाब के आँसू बह रहे थे. देवता दहल गये-अगर आग और तेजाब के ये आँसू इसी तरह गिरते रहे तो स्वर्ग की दूसरी मंजिल और धरती जल जाएगी और हम सूअरों की तरह भुन जाएँगे. सो उन्होंने शनि से विनती की कि शनि देवता शिव के इस क्रोध को अपने प्याले में ग्रहण करे. सती का शव अनश्वर है, इसलिए हमें उनके अंगों का विच्छेद कर देना चाहिए! देवताओं ने राय की. शनि का पात्र बहुत छोटा था, उसमें शिव के अग्निअश्रु नहीं समा सके. वे आँसू धरती के सागरों में गिरे और वैतरणी में चले गये. शिव और सती के इस अलौकिक प्रेम को देखकर पृथ्वी रुक गई, हवा रूक गई, जल का प्रवाह ठहर गया और रुक गईं देवताओं की सांसे. सृष्टि व्याकुल हो उठी, सृष्टि के प्राणी त्राहिमाम पाहिमाम पुकारने लगे. इस भयानक संकट को देखकर पालक के रूप में भगवान विष्णु आगे बढे, वे भगवान शिव की बेसुधी में अपने चक्र से सती के एक एक अंग को काट कर गिराने लगे, कट कट कर सती के अंग पृथ्वी पर इक्यावन स्थानों पर गिरे. इस तरह से सती का पूरा शरीर बिखर गया. शिव एक बार फिर जोगी हो गये. अपनी खाली बाँहें देखकर और इधर-उधर ब्रह्माण्ड घूमते रहे. धरती पर जिन इक्यावन स्थानों में सती के अंग कर कर गिरे थे, वे ही स्थान आज शक्ति के पीठ स्थान माने जाते हैं. आज भी उन स्थानों में सती का पूजन होता हैं, उपासना होती है. धन्य था शिव और सती का प्रेम शिव

और सती के प्रेम ने उन्हें अमर बना दिया है, वंदनीय बना दिया है. कैलाश में जाकर ब्रह्मा जी ने शिव जी को समझाया कि यह केवल उनका भ्रम ही हैं कि, सती का देह-पात हो गया हैं, जगन्माता ब्रह्मा-स्वरूपा देवी इस जगत में विद्यमान हैं. सती ने तो छाया सती को उस यज्ञ में खड़ा किया था, छाया सती यज्ञ में प्रविष्ट हुई, वास्तविक रूप से उस समय देवी सती आकाश में उपस्थित थी. आप तो विधि के संरक्षक हैं, कृपा कर आप वहां उपस्थित हो यज्ञ को समाप्त करवाएं.

अंततः शिव जी, ब्रह्मा जी के साथ दक्ष के निवास स्थान गए, जहाँ पर यज्ञ अनुष्ठान हो रहा था. तदनंतर, ब्रह्मा जी ने शिव जी से यज्ञ को पुनः आरंभ करने की अनुमति मांगी, इस पर शिव जी ने वीरभद्र को आज्ञा दी की वह यज्ञ को पुनः प्रारंभ करने की व्यवस्था करें. इस प्रकार शिव जी से आज्ञा पाकर वीरभद्र ने अपने गणो को हटने की आज्ञा दी तथा बंदी देवताओं को भी मुक्त कर दिया गया. ब्रह्मा जी ने पुनः शिव जी से दक्ष को भी जीवन दान देने का अनुरोध किया. शिव जीने यज्ञ पशुओं में से एक बकरे का मस्तक मंगवाया तथा उसे दक्ष के धड़ के साथ जोड़ दिया गया, जिससे वह पुनः जीवित हो गया। (इसी विद्या के कारण उन्हें वैध-नाथ भी कहा जाता हैं, शिव जी ने दक्ष के देह के संग बकरे का मस्तक तथा गणेश के देह के संग हाथी का मस्तक जोड़ा था, जो आज तक कोई

भी नहीं कर पाया हैं) ब्रह्मा जी के कहने पर, यज्ञ छोड़ कर भागे हुए यजमान निर्भीक होकर पुनः उस यज्ञ अनुष्ठान में आयें तथा उसमें शिव जी को भी यज्ञ भाग देकर यज्ञ को निर्विघ्न समाप्त किया गया.

इसके पश्चात बकरे के मस्तक से युक्त दक्ष ने भगवान शिव से क्षमा याचना की तथा नाना प्रकार से उनकी स्तुति की, अंततः उन्होंने शिव-तत्व को ससम्मान स्वीकार किया.

शिव अब पूर्ण रूप से तपस्वियों के पूर्ण अवतार थे. कुछ वर्ष बाद वे दिगम्बरों के समाज में पहुँचे. शिव वहाँ भिक्षाटन करते, पर दिगम्बरों की पत्नियाँ उनके प्रति आसक्त हो गयीं. अपनी पत्नियों का यह हाल देखकर दिगम्बर देवताओं ने शाप दिया- इस व्यक्ति का लिंगम् धरती पर गिर जाए! शिव लिंगम धरती पर गिर गया. प्रेम तत्काल नपुंसक हो गया-पर देवताओं ने यह नहीं चाहा था. उन्होंने शिव से प्रार्थना की कि वे लिंगम् को धारण करें. शिव ने कहा, 'अगर नश्वर और अनश्वर मेरे लिंगम् की पूजा करना स्वीकार करें, तो मैं इसे धारण करूँगा अन्यथा नहीं!"

दोनों प्रजातियों ने ये स्वीकार नहीं किया, यद्यपि प्रजनन का वह एक मात्र माध्यम था, इसलिए वह वहीं बर्फ में पड़ा रहा और शिव ने दुख की अन्तिम श्रृंखला पार की और उस पार चले गये.

और तब धरती पर 3,600 वर्षों के लिए शान्ति और अत्याकुल युग का अवतरण हुआ-जोकि शायद इस युग तक चलता, अगर तारक नाम का आत्मसंयमी कट्टर राक्षस पैदा न हुआ होता. क्योंकि उसका आत्मनिषेध देवताओं के लिए खतरा बन गया. जरूरत थी दुनिया को पवित्र रखने की, दूसरे शब्दों में अपने लिए सुरक्षित रखने की. भविष्यवाणी यह थी कि तारक का वध एक सात दिवसीय शिशु द्वारा किया जा सकता है, जो शिव और देवी के सम्मिलन से होगा, जो एक वन में जन्म लेगा और कार्तिकेय नाम से जाना जाएगा. कार्तिकेय यानी मंगलग्रह अर्थात् युद्ध का देवता-वह ग्रह जो सब देशों को दिशा देता है.

अब एक नई प्रेमकथा का प्रारम्भ होना था.

महेशं सुरेशं सुरारातिनाशं
विभुं विश्वनाथं विभूत्यङ्गभूषम्
विरूपाक्षमिन्दुर्कवह्नित्रिनेत्रं
सदानन्दमीडे प्रभुं पञ्चवक्तम्

हे महेश्वर, सुरेश्वर, देवों (के भी) दुख्खों का नाश करने वाले विभुं विश्वनाथ (आप) विभुति धारण करने वाले हैं, सूर्य, चन्द्र एवं अग्नि आपके तीन नेत्र के सामान हैं, से सदा आनन्द प्रदान करने वाले पञ्चमुख वाले महादेव मैं आपकी स्तुति करता हूँ.

समाप्त

काम की बातें

- भूख पेट, खाली जेब और झूठा प्रेम, इंसान को जीवन में बहुत कुछ सिखा जाता है.
- प्रतिभा का विकास शांत पर्यावरण में होता है और चरित्र का विकास मानव जीवन का तेज प्रवाह में.
- सकारात्मक व्यक्ति सदा दूसरों में भी सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है.
- सपने वो सच नहीं होते जो सोते वक्त देखे जाते है सपने वो सच होते है जिनके लिए आप सोना छोड़ देते है.
- संभव की सीमा जानने का केवल एक ही ढ़ंग है, असंभव से भी आगे निकल जाओ.
- सफलता तुम्हारा परिचय विश्व से करवाती है और असफलता तुम्हें विश्व का परिचय करवाती है.
- कठिन समय में समझदार व्यक्ति रास्ता ढूंढ़ता है और कायर बहाना.
- दो चीजें देखने में छोटी नजर आती है. एक दूर से और एक गुरूर से.
- गलत फहमी का एक पल इतना विषैला होता है जो प्यार भरे सौ लम्हों को एक क्षण में भुला देता है.
- जीवन में एक बार जो निर्णय कर लिया तो फिर पीछे मुड़कर मत देखो, क्योंकि पलट-पलट कर देखने वाले इतिहास नहीं बनाते.
- आप जो आज अपना मूल्य आंकते है, कल की सफलता उसी का साकार रूप है.

संग्रह-**मनीषा सैनी**, जींद

भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार के राज में, गधा पंजीरी खाय।
जो इससे टकराय हैं, चूर-चूर हो जाय।।
भ्रष्टतंत्र में आज हैं, नेता अफसर मस्त।
देश की जनता आज हैं, त्रस्त आज सर्वत्र।।
जनता की सरकार हैं, लोकतंत्र में आज।
वही जनता अब लुट रही, आज बीच बाजार।।
चीरहरण हो रहा देश का, क्या होगा अंजाम।
बचा सकते है भारत वर्ष, को केवल राधेश्याम।।
ईमानदार व्यक्तियों की, कही नही पूछ।
समाज में ऐसे लोगों को, समझा जाता मूर्ख।।
भ्रष्टतंत्र में चपरासी भी, अरब पति हैं आज।
ईमानदार अधिकारी केवल, पति रह गये आज।।
शिक्षा के क्षेत्र में, बढ़ रहा भ्रष्टाचार।
खुलेआम हो रही नकल, प्रश्न पत्र बिके बाजार।।
परिवारवाद में परिवर्तन हो गया, देखो समाजवाद।
इसी कारण से बढ़ रहे, देश में वाद विवाद।।
भ्रष्टाचार के कारण ही, बढ़ रहा अतंकवाद।
मजहब के भी नाम पर, बढ़ रहा कट्टरवाद।।
धर्म के नाम पर आज हो रहे, है अधर्म के काम।
मजहब का भी नाम हो रहा, दुनिया में बदनाम।।
भ्रष्टाचार के कारण आया, घोटालों को राज।
दूजी कोयला कामनवेल्थ, है इसके सरताज।।
इस पौधे की बेल देखिये, कहॉ पहुॅच गई आज।
उद्घाटन से पहले गिर रहे, पुल फ्लाई ओवर आज।।
इसमें लगने वाला सामान, बंगलों में लग रहा आज।
क्यों नहीं गिरते बंगले कोठियॉ, कोई बतायें आज।।
ठेकेदार नेता और अफसर, कर रहें बंदर बाट।
जनता के पैसों पर इनके, आज देखिये ठाट।।
दलाल और बिचौलियो के, कारण बढ़ रहा भ्रष्टाचार।
किसानों से खरीदकार है, बेचने ऊंचे दाम बाजार।।
आत्महत्या को मजबूर है, अब किसान मजदूर।
देश की यह विकराल समस्या, कब तक होगी दूर।।
मंत्री से लेकर संतरी, जब हो जाये बेईमान।
कैसे बचेगा राष्ट्र का, सोचो तब सम्मान।।
सौदा कर रहे चंद पैसों में, मातृभूमि का आज।
अपने वतन से गद्दारी कर, उन्हे न आती लाज।।
खाक वस्तुओं में भी देखो, फैला भ्रष्टाचार।
नहीं मिल रहा जनता को, आज शुद्ध आहार।।
मिलावटखोरों से जनमानस, आज बहुत परेशान।
दवाइयों को भी नही छोड़ा, जनता है हैरान।।
नहीं रहेगा देश जब, क्या होगा सबका हाल।
आने वाली पीढ़ियॉ, हो जायेगी बदहाल।।
देश के बाहरी दुश्मनों से, खतरा कम है आज।
आस्तीन के सापों से ज्यादा, खतरा है आज।।
जय चंद और मीरजाफरों से, होना होगा सावधान।
तभी बचेगा देश हमारा, और उसका सम्मान।।
आसपास की गतिविधियों पर, नजर रखें हम आज।
बुरी नजर वालों के मुॅह को, काला कर दे आज।।
अंधकार के युग में भी किरण, शेष है आज।
ईमानदार लोगों के कारण, देश चल रहा आज।।
इसी देश में लाल बहादुर, शास्त्री जी रहे प्रधान।
आज भी उनके पास नहीं है, अपना कोई मकान।।
डॉ० कलाम और अटल बिहारी, रहे देश की शान।
राष्ट्र से मिला इन सब लोगों को, भारत रत्न सम्मान।।
अपने जीवन काल में, रहे सदा बेदाग।
कृतज्ञ राष्ट्र ऐसे लोगों को, सदा रखेगा याद।।
भ्रष्टाचार भी नींव को, यदि करना हैं कमजोर ।
नई पीढ़ी को नैतिक शिक्षा, देनी होगी भरपूर।।
प्रत्येक नागरिक देश का, यदि होगा ईमानदार।
स्वतः दूर हो जायेगा, तब 'सतीश' भ्रष्टाचार ।।

-**सतीश कुमार मिश्र 'सत्य'**, इलाहाबाद

तलवारों में जलती धार भर ड़ाला

पुरानी हो चुकी है बात, आजादी की मत समझो।
न समझो तुम कि राहे, फूल सी आसान हो बैठी।
करें जो भूल से भूल, सीमा तोड़ने वाली।
नही समझेगें मन से बात मन को जोड़ने वाली।
न चुप बैठो कि उनके शीश को, तुम काट कर डालो।
उठो इन कुछ तलवारो में जलती धार भर डालो।।1।

ये दुश्मन की है साजिश, आग जो बुझ-बुझ के जलती।
नियत गन्दी गलत करतूत, उनके मन में पलती हैं।
करें जो देश में ही देशद्रोही, सी भरी बातें।
समझना वो भी दुश्मन है, करेगा घात पर घातें।
दुश्मन को मिटाने की, हृदय में व्यास भर डालो।
उठो इन कुंद तलवारों में, जलती धार भर डालो।2।

करो जिस ओर रूख अपना, कि दम तूफा का थम जाये।
तुम्हारी गर्जना से सिंधु भी, दो पल ठहर जाये।
अरे! मुक्त जायेगा यह आसमां, तेरे इशारों पर।
ये पर्वत भी पिघल कर, राह का फरमान बन जाये।
शक्ति की अतुल गुंजान, से ब्रम्हाण्ड भर डालो।
उठो इन कुंद तलवारों में, जलती धार भर डालो।3।।

शहीदों की चिताओं पर, लगेगें हर बरस मेले।
ये सच्ची बात हैं, इसको हृदय से मान लेना तुम।
न टूटे श्रृंखला दीपों की, तुम को आने मत देना।
जीवन के इसी उद्देश्य को, बस ठान लेना तुम।
कि माँ के आंचलों में, आज फिर त्यौहार कर डालो।
उठो इन कुंद तलवारों में, जलती धार भर डालो।4।
-श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली', रायबरेली, उ.प्र.

समय की बात

किसी के दर्द को मैंने, कभी समझा नहीं साथी।
उठी नर्जर कभी झुकने, का आलम क्या भला जाने।।
झुकी होती जो नजरें तो निगाहें देखती उनको।
हमारे पांव से सटकर चले जो बनकर परछाई।।
उन्हीं तिनकों पर चढ़ने जब लगा वो आसमानी रंग।
गजब हैरत में था कि मेरी पहचान ठुकराई।।
समय की बात हैं इस पर किसी का जोर है कैसा।
कभी साहिल न मिला मुझको, कभी करती न नजर आयी।।
खुदा के घर हिसाबी काम बड़ा जोरों पर होता हैं।
न खुश हो तू कि लेकर तू बड़ा मीरे जदा निकला।।
अभी उसकी खबर है जा रहा हैं वो बना मुजरिम।
जाना हैं तुझे भी देख तेरी भी खबर आयी।।
-अजय **द्विवेदी**, रायबरेली

ग़ज़ल

दर्द सीने में रख ये, मौन मुस्कान रखते है।
हम भीड़ से इतर अपनी पहिचान रखते है।।
हम यायावरो के सर पर, कोई छत नही होती।
यार हम सबके लिए खुला आसमान रखते है।।
किसी को दिलो-जॉ, किसी को दुआ दे देते।
हम दरवेश सबके लिए, खुशी का सामान रखते है।।
ओशो, सूर, कबीरा, तुलसी, मीरा, लल्ला, रबिया।
मिरे साथ फरीद, नजीर, रहीम, रसखान चलते है।।
खैराती दावते तोहफा-पी-ईनाम के हम कायल नही।
हम अपनी मेहनत की कमाई पे ईमान रखते है।।
अपने-बेगाने में हम फकीर कोई फरक नही करते,।
'विद्रोही' दिल में इश्क, ऑखो में सदा सम्मान रखते है।।
-कुँ० बीरेन्द्र सिंह विद्रोही, ग्वालियर, म०प्र०

आजकल के कवि सम्मेलन

चुटकुले सुनकर ही जो ताली बजाते है,
ऐसे श्रोताओं को हास्य-व्यंग्य आते है।
गीत ग़ज़ल कुण्ड़लियॉ साहित्यिक विधाओं में,
हॅसने-हॅसाने वाले भाव कहॉ आते हैं।।
मंचो पर चहलकदमी करते फूहड़पन से,
ऐसे सम्मेलन में सभी ना टिक पाते हैं।
प्रेम विरह तान में ओजस्वी राष्ट्रगान में,
साहित्यिक वातावरण सभी ना बना पाते हैं।।
कविता की कुंज गली कभी अधखिला,
भॅवरे बन करके रसिक कवि गुनगुनाते है।
देखकर वातावरण गोष्ठी का संचालन,
मॅजे हुए कवि तद्नुसार गीत गाते है।।
-डॉ० गौरी शंकर श्रीवास्तव 'पथिक', सतना, म.प्र.

कहानी

तपती रेत

-ज़ेबा रशीद
151, चौपासनी चुंगी चौकी के पीछे,
जोधपुर-342009, राजस्थान

गहरे रंग का लहंगा चुन्दरी में उस छोटे से गांव के बाजार में इधर-उधर घूमकर अन्नो सामान खरीदती तो कई उल्टी-सीधी बातें कर देती. उसने तो कभी कोई काम किया ही नहीं था. सब औरतें उसे हैरत से देखती दांतों तले अंगुली दबा लेती और मर्द ललचाई नजरो से देखते, खुसर-पुसर करते.

इतनी सुन्दर, देखने में रईस और नौकरानी का काम?

नीला तो उसे तराशने लगी थी. उसे आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रसव कराना व दूसरा काम सिखाने लगी.

मुँह पर कालिख पूतने का दर्द उसे तब और जाना जब उसे ज्ञान हुआ कि चन्दन का अंश उसके गर्भ में पल रहा है तो...? नीला ने उसे फिर उबार लिया.

इतनी सुन्दर, देखने में रईस और नौकरानी का काम? उसका पेशा खूब फल-फूल रहा था. लेकिन अकेली औरत भरपूर जवान. कदम-कदम पर परेशानियां आने लगी. एक दिन जागीदार की हवेली से बुलावा आया. लड़के की खुशी की खबर देने गई.

'बहुत नाम सुना है अन्नो बाई तेरा.' वह जागीरदार की नजर पर चढ़ गई.

पांच साल में अन्नों ने पीछे मुड़कर नहीं देखा. नीला तो चली गई लेकिन वह वहीं बस गई. अन्नो दाई...अचानक अपने अन्दर की पीड़ा और त्रासदी में गोते लगाने लगी. अब तो मैं चाहूं तब भी नही लौट सकती. वह स्मृतियों के दंश चुपचाप सहती इस गांव से गहरा रिश्ता जोड़ लिया.

माघ महीने की कुनकुती धूप धरती पर पसर गई फिर बून्दा-बून्दी शुरू हो गई. थोड़ी देर बाद जमकर बरसने के बाद वर्षा शांत हो जाती. सूरज बादलों के बीच झांकने लगा. पेड़ पौधे बरसात में नहाकर जैसे ताजा हो जाते.

कभी फाल्गुन आता टेसू की लालिमा से गांव रंग जाता. फागुनी बयार से वातावरण मादक बन जाता. खेतों में गेहूँ लहलहाते तो उसका मन मयूर नाच उठता.

उसका पेशा खूब फल-फूल रहा था. लेकिन अकेली औरत भरपूर जवान. कदम-कदम पर परेशानियां आने लगी. एक दिन जागीदार की हवेली से बुलावा आया. लड़के की खुशी की खबर देने गई.

'बहुत नाम सुना है अन्नो बाई तेरा.' वह जागीरदार की नजर पर चढ़ गई. कदम-कदम पर परेशानी. हालात ऐसे कि ऐसे में कोई साथ नही देता. जब ऐसी ही जिन्दगी गुजारनी है तो यही सही. वह जागीरदार की शरण में आ गई.

जगीरदार रईस हुसैन ने उसे रहने के लिए एक मकान दे दिया. जिन्दगी में बेफिक्री व चैन तो आ ही गया. लेकिन अपनी दोस्ती के सदके रईस हुसैन अपने कई काम साधता जो अन्नो का दिल गवाह नहीं करता फिर भी करने पड़ते.

अन्नो दाई पैदाइशी दाई तो नही थी पर अनुभव बहुत था. साधारण प्रसव तो बातो-बातो में करा देती. पेचीदा से पेचीदा प्रसव भी वह हाथोहाथ निपटाने में माहिर थी.

गांव की कोई गली ऐसी नही थी जहाँ अन्नो दाई के कदम नही पड़े. वह तो पूरे गांव की राजदार थी.

दाई से कभी पेट छुपता? एक-एक मर्द, औरत, जवान, विधवा, तलाकशुदा व कंवारी सभी औरतो की करतूतो पर परदा डालने वाली अन्नो दाई का सबसे गहरा रिश्ता था.

जज्बात के बहाव में लड़कियां खुद को लुटाकर उस मंजिल पर पहुँच जाती थी जहाँ बदनामी की आग उनके पूरे वजूद को घर लेती है. उनकी माताएं अन्नो दाई के आगे हाथ जोड़ती, मिन्नत करती अपनी इज्जत आबरू बचाने की गुहार करती. मारती पीटती अपनी बेटी को, उसके हवाले करती और एक मोटी रकम उसके कदमो में रख देती. उस लड़की की जिन्दगी तबाह होने का दर्द...दूसरी तरफ भगवान का डर. लेकिन उसे अपने दिन याद आ जाते और उनकी जिन्दगी को बचाने का अहसास उसमें साहस भर देता. दिन में भगवान का डर निकल जाता और काली रात की खामोशी के सीने में वो राज दफन कर देती.

अतीत कैसा ही मीठा हो या कड़वा वह उसे भूलना ही अपना हित समझती. बीस साल का समय कैसे सरका उसे पता ही ना चला. अन्नो दाई यश व कीर्ति के शिखर पर खड़ी थी.

बशीरा कॉलेज से निकल कर आया तो कोई काम धन्धा नही करता था. बाप की मेहनत मजदूरी की रोटियां तोड़ता अधेड़ होने तक बाप का खून शराब के जरिए पी गया. आखिर बाप भी खतम हो गया.

एक दिन भूखा प्यासा अनारकली के द्वार पर आ बैठा. अन्नो को भी अपना अकेलापन खलता था. अपने दिल की बातें किसी को कहना चाहती थी.

बशीरे की बड़ी-बडी आंखों में खोकर वह अपने सुख-दुःख की बातें कर लेती. बशीरे ने उसका मन मोह लिया. 'बशीरा मुझसे शादी करेगा?' तन्हाइयों से उबकर अन्नो ने एक दिन अचानक पूछा. 'किस बूते पर? मैं तूझे बैठा कर रोटी नहीं खिला सकता...रोटी तो तुझे ही जुटानी पड़ेगी.'

वह जोर से हंस दिया.

मृदुला...नहीं तो वह तो अनारकली है. बशीरा ने पूछा 'मौलवी को बुला लाऊं' दोनों ने निकाह पढ़ ली. बशीरा के हाथ सोने की चिड़िया लग गई. ज्योंही अन्नो के हाथ में रूपये आते वह झपट लेता. कभी मजाक से....तो कभी जोर जबरदस्ती से. अन्नो दाई के पैसों के दम पर दनदनाता फिरता. शराब की नदी में डूबकी लगाकर मकान के सामने बड़ के नीचे पलंग पर पड़ा रहता.

अन्नो को शुरू से ही चांदनी रातों में नींद नहीं आती थी. वह लेटे-लेटे देर तक मन में बातें करती माँ के नाम हवाओं को संदेश देती....चाँद में छोटी बहन का चेहरा तलाशती...उसकी आँखे चाँद पर ही टिकी रहती थी.

अब भी उसकी रातें सोते-जागते पहले की तरह ही अजनबी घरों और उन औरतों के बीच गुजरती थी जो प्रसव पीड़ा से बेहाल उसके सामने कराहती पड़ी रहती थी. उस वक्त वह अन्नो दाई नहीं एक हमदर्द माँ बन जाती.

अक्सर, बेहद कमजोर होने के बावजूद भी एक के बाद एक बच्चा जनने को मजबूर औरतें उसके पास आती. मर-मर के बच्चे को जन्म देने की तकलीफ उठाती. तब वह अपना क्रोध उस पर निकालती. फटकारती....गुस्से में उसके मुँह से हिन्दी, अंग्रेजी के शब्दों का साफ उच्चारण सुनकर सब उसे हैरत से देखते. उन पर क्रोध बरसाने के बाद उस औरत का ख्यिाल भी बहोत रखती. वह औरतों की मजबूरी जानती थी. यह गुस्सा तो मर्दो के प्रति होता था.

'ए बाई तुझे इतनी उमर में भी बच्चे जनने का चाव है. अपने पति को क्यों नहीं कहती बस...

कई औरतों से मजाक भी खूब करती. 'ए बीबी अब पता चलेगा कि प्रसव में भी कितना मजा होता है.''

बशीरा प्यार तो बहुत जताता लेकिन उसकी कमाई पर राज करता. वह भी सोचती मेरे कौन बैठा है खाने वाला. सोचा था बशीरा पढ़ा लिखा समझदार है पर हुआ उल्टा. हालात ने अन्नो को तन्हा जिन्दगी जीने को मजबूर कर दिया.

अगर किसी औरत को पति से दबते देखती तो उसे शेरनी बनने को उकसाती लेकिन खुद बशीरा के आगे दब्बू बन जाती.

यूं तो जागीरदार रईस हुसैन ने कई औरतों को अपनी जिन्दगी में साथी बनाया था चाहे घण्टे-दो घण्टों के लिए ही पर अन्नो से दोस्ती पक्की थी. एक दिन हवेली जाते ही रईस हुसैन ने उसका हाथ में लेकर कहा, ''कमरू मोची की बीबी पर मेरा दिल आ गया. ..अन्नो कुछ कर.''

''लेकिन वह नहीं मानेगी...शेरनी है फाड़कर खा जायेगी.''

''तेरे आगे सब पानी भरती है.''

''अच्छा कोशिश करती हूँ.''

चंदा तालाब पर जा रही थी! अन्नो उसके पीछे चल दी. चंदा तो नाम की नहीं तन से भी चाँद है. सफेद दुधिया रंगत की तीस वर्षीय चन्द्री के भाग्य में काली चादर थी. अपने से तिगुनी आयु वाले पति के साथ जिन्दगी की नांव से खेती रही. कुछ महीनों में ही विधवा हो गई.

विधवापन की काली चादर की पर्तो में खुद को छिपाने की कोशिश करती पर चांदनी छिटक ही जाती है.

कमरू की मृत्यु के बाद कई लोग उसके पीछे लगे. कई प्रस्ताव भी आए लेकिन वह नहीं मानी. सास व कमरू के बच्चे ही उसके अपने थे. प्रस्ताव सुनाते ही वह बिफर गई.

''तू क्यों नहीं बन जाती उसकी रखैल?'' चन्दा ने तड़ से जवाब दिया.

''मैं तो बहुत पहले से ही अपना सब कुछ दे चुकी हूँ बहना. देख चन्द्री मैंने तो बहुत भुगता है. सबको बस एक ही चाह होती है. अरे जब ऐसी ही जिन्दगी गुजारनी है तो क्यों ना एक का दामन पकड़कर बैठा जाय. दर-दर की ठोकरों से क्या होगा?

''हटो मुझे परेशान मत करो अन्नो बाई.''

''कभी किसी ने सताया तो?...इससे तो मैं कहती हूँ कि ऐसे वैसे मर्दो से बचना है तो एक की हो ले''

''मैं यूंही ठीक हूँ. मैं सब कुछ नहीं चाहती.''

''यह जिन्दगी की सच्चाई है तू बच तो नहीं सकती बरबाद तो ये पागल कुत्ते तुझे कर ही देंगे....जिसके पीछे पड़ते हैं वह बच नहीं सकता.''

'मैं सबका सामना करूँगी.'
'बहना मैं भी ऐसा सोचती थी! पर हार गई...इसलिए मैंने भी एक का हाथ पकड़ लिया. अकेली औरत का इस दुनिया में रहना बड़ा मुश्किल है. तू सोच ले...''
''अगर वो मुससे निकाह करे तो मैं हवेली आ सकती हूँ.'' उसने कुछ सोचकर कहा. जागीरदार ने उसका दिल रखने के लिए निकाह कर ली. वह हवेली में आ गई. दो रात के बाद ही जागीरदार ने उसे उसकी हैसियत बता दी.
''अब बेगम की हाजरी में रह या हवेली से निकल जा...मैं तुझे तलाक देता हूँ.''
''मैंने निकाह की है. मैं हवेली से नहीं जाऊँगी.''
चन्द्री जिद पर अड़ गई.
उखड़ी-पुखड़ी दीवारों वाला और खपरैल की छत वाला कमरा, हवेली के पिछवाडें था उसे रहने के लिए दे दिया. भैंसों के बाड़े के पास कमरे में पड़ी रोती रही. रोते-रोते उसे साहस आ गया. मैं सामना करूँगी. मेरी बरबादी का बदला लूंगी.
उसने अन्नो को बुला भेजा. अन्नो आई तो उसकी आँखों में आँसू नहीं थे. गुस्से की चिनगारियों ने आँसू सूखा दिए.
जब स्त्री अपने में से अनावश्यक भय व झिझक निकाल देती है तो साहस आ ही जाती है.
अन्नो के पास आते ही वह भड़क उठी. शेरनी की तरह उस पर टूट पड़ी. चीख-चीख कर सबको बताने लगी.
''इस क्रूरनी ने मेरा धर्म बिगाड़ा... निकाह किया...अब खुदा रसूल का वास्ता देकर तलाक दे रहे है.''
''इतना तो मैं भी समझ गई हूँ कि जागीरदार ने निकाह क्यों पढ़ी. ताकि आसानी से तलाक दे सके.''
अन्नो दाई उसे शेरनी की तरह दहाड़ती देख खड़ी रह गई.
''कुरान मजीद में भी लिखा है बिना वजह तलाक नहीं हो सकता. मैं ऐसी तलाक को क्यों मानूं जो धोखा देकर दी जा रहीं है.''
चंदा के ललकारने पर उसमें भी हिम्मत पैदा हुई.
''मैं ऐसा क्यों नहीं कर सकी? क्या पाया मैंने दब्बू बनकर.'' वह खिसयानी बिल्ली की तरह खड़ी चन्द्री का दहाड़ना सुन रही थी.
चन्द्री का दहाड़ना सुनकर जागीरदार की मर्दानगी जैसे रूई की तरह धुनक कर रह गई.
''इस नकचड़ी को समझा अन्नों.'' इसे मोटी रकम देकर रवाना कर रहा हूँ पर नहीं मानती...'' रईस ने कहा.
चंदा ने अन्नो को गालियां देते हुए कहा ''तुझ में हिम्मत होती तो आज तेरी यह हालत नहीं होती. किस लालच से खद को जागीरदार के पास रहन रख दिया.''
''तूने कितनी औरतों को बिगाड़ा होगा? तेरे कहने पर मैंने निकाह किया.''
चंदा का ऐसा रूप देखा तो अन्नो दाई की आँखें खुल गई.
''सच है मैं क्यों डरूं इन मर्दो से?'' अनार का ग्लानि से सिर नीचा हो गया. मैंने ही इसकी जिन्दगी बिगाड़ी है.
'थू है तुझ पर अन्नो...' उसने उस पर थूक दिया.
'एक बात समझकर मैंने निकाह किया है, अब यहाँ से मरकर ही निकलूंगी! अल्लाह ने मर्दो को तलाक का हक दिया है. पर साथ ही बिना वजह तलाक नहीं दे सकते, हिदायत भी दी है. पर पुरूष तो सोचता है मैं सब कुछ हूँ. जो करूंगा मेरी मरजी ही चलेगी' वह रईस हुसैन के सामने जाकर खड़ी हो गई.
''तलाक देने का हक तो खुदा ने औरत को भी दिया है पर औरत ने कभी बिना कारण पति को तलाक नहीं दिया. कब तक औरतें छली जायेंगी?''
उसकी चेतना का तेज देख कर अन्नो की वर्षो से सोई चेतना जाग उठी. उसने रईस की तरफ देखा. उसे लगा चन्दन और रईस में कोई फरक नहीं. क्रोध से उसकी कनपटियों में रक्त तेजी से प्रवाहित होने लगा. उसके मुँह से हिन्दी और अंग्रेजी के शब्दों का उच्चारण सुनकर सभी उसे आश्चर्य से देखने लगे.
'तूने इससे शादी की है. यह औरत कोई आवारा, बदचलन नहीं है समझे. जागीरदार यह औरत तेरी पत्नी है.'
भीतर का उद्वेग बाहर की सच्चाइयों से दो चार होने लगा.
'चन्द्री तू सही है, क्यों ज्यादती सहेगी तू...क्यों डरूँ मैं भी...''
चंदा की खूंखारी को देखकर उसमें भी सोती मृदुला जाग गई. एक टूटी-फूटी औरत जाग गई. वह हवेली से बाहर आई.
'जो औरत मुहब्बत में डूब सकती है वह दिलेर होती है और औरत की दिलेरी खतरनाक होती है, क्योंकि वह बहुत सच्चाई से मुहब्बत करती है और उतनी ही सच्चाई से मर्दो से नफरत भी कर सकती है.
वह सोचती आगे बढ़ रहीं थी. बाहर से कुछ नहीं बदला. लेकिन मन के भीतर सब कुछ बदल गया. जैसे वह नई जिन्दगी की तरफ कदम बड़ा रहीं है.

अब वह बशीरा के बारे में सोच रही थी. उसका निम्मापन व बैगरती...क्यों सहूँ मैं? बरसों से मुझ पर हुक्म चला रहा है.

अन्नो ने फैसले के अन्दाज में उसे कहा 'बीवी की कमाई पर ऐश करता है और उसे ही हरामखोर कहता है. हुक्म चलाता है! जा बुला ला तेरे मौलवी को आज मैं तुझे तलाक दूंगी. ..तलाक."

जैसे नंगी डालियों वाले पेड़ अचानक फूलों से लद गए हों, सारी प्रकृति बदल गई.

"अन्नो...अन्नो दाई!"

वह पुकार सुनकर दरवाजा खोलकर खड़ी हो गई.

"इसे बचा लो...इसकी मोहब्बत ने इसे जिन्दा लाश बना दिया....अन्नो.. .इसे बचा लो."

"क्या यह...?"

औरत ने बिना कुछ कहे सकारात्मक रूप से सिर हिला दिया और साथ ही प्रश्न सूचक निगाहों से उसे देखा.

वह नादान लड़की खाली-खाली निगाहों से उसे देखकर सिर झुकाए उसके पैर पकड़ने लगी.

अन्नो ने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरा तो उस लड़की ने उसके दोनों हाथ पकड़ लिए और सिसरने लगी.

इससे पहले उसके भीतर का दर्द स्नेह आँसू का सहारा लेकर बाहर आता. एक नादान लड़की की जिन्दगी...खुशियों को बचाने चल दी.

उबड़-खाबड़ जमीन पर घास के छोटे-छोटे पौधे उग आए. हरी-हरी पत्तियों के बीच छोटे-छोटे...कहीं पीले, कहीं लाल फूल खिलने लगे. पेड़ो में बया के घौसले लटक रहे थे. उनमें नई जिन्दगियां पल रही थी.

पत्तों पर कभी कोई कीड़ा फूदकता तो अन्नो को लगता मेरी आत्मा भी ऐसे ही....

काव्य सम्राट प्रतियोगिता-2019

इस प्रतियोगिता में किसी भी उम्र का कोई भी हिन्दी प्रेमी/हिन्दी भाषी प्रतिभागी बन सकता है. यह प्रतियोगिता तीन चरणों में सम्पन्न होगी. अंतिम चरण में सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागी को ही काव्य सम्राट की उपाधि व नगद 11000/रुपये प्रदान किए जाएंगे. अंतिम चरण के सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र दिया जाएगा. सभी प्रतिभागियों की रचनाओं को पुस्तकाकार में प्रकाशित भी किया जा सकता है.

नियम एवं शर्तेः

01 इस प्रतियोगिता के लिए उम्र की कोई सीमा निर्धारित नहीं है.

02 प्रतियोगिता तीन चरणों में होगी. प्रथम चरण में शामिल सभी रचनाकारों की रचनाओं को पुस्तकाकार में प्रकाशित किया जा सकता है. जिसकी एक प्रति साधारण डाक से प्रतिभागी को भी प्रेषित की जाएगी.

03 पाठकों की राय के आधार पर द्वितीय चरण के लिए केवल 15 रचनाकारों का चयन किया जाएगा. त्रिस्तरीय निर्णायक मंडल द्वारा रचनाओं का स्तर, शैली, शब्द रचना को देखकर तृतीय एवं अंतिम चरण के लिए 11 रचनाकारों का चयन किया जाएगा.

04 तृतीय चरण में चयनित रचनाकारों को स्वयं उपस्थित होकर काव्य पाठ करना होगा. तीसरे चरण के सभी प्रतिभागियों को सहभागिता प्रमाणपत्र दिया जायेगा. प्रत्येक चरण में विजयी प्रतिभागियों को सूचना मोबाइल संदेश/ व्हाटसऐप/ ईमेल से दी जाएगी.

05 सर्वश्रेष्ठ/विजेता को काव्य सम्राट की उपाधि व नगद राशि व उपहार दिया जाएगा.

06 प्रतिभागी को मौलिकता दशार्ते हुए एक रचना के साथ एक फोटो, नाम, पिता का नाम, जन्म तिथि, पता, ईमेल/व्हाटसएप नंबर, दूरभाष भेजनी होगी तथा रुपये दो सौ का धनादेश/चेक/डीडी अथवा **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी भी शाखा से **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'** के नाम से **खाता संख्याः 538702010009259** में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा।

आवेदन की अंतिम तिथि 15 नवम्बर 2019

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
65ए/2, रामचन्द्र मिशन रोड, लक्सों कंपनी के सामने, मुण्डेरा,
इलाहाबाद-211011, ह्वाटसएप नं०: 9335155949,
sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

डॉ0 प्रदीप कुमार शर्मा, रायपुर, छ.ग. की लघु कथाएं

मेरा भारत महान

स्कूल से आते ही मैंने कहा-''गोलू बेटे! परसों दिवाली है. दीवाली पर तुम्हें कौन-कौन से और कितने पटाखे चाहिए? बाजार से क्या-क्या सामान लाना है? मम्मी से सलाह करके एक लिस्ट तैयार कर लो.''

आशा के विपरीत गोलू बोला-''पापाजी मैं कुछ और सोच रहा हूँ. कल हमारे स्कूल के सभी छात्र-छात्राएँ उरी हमले में शहीदों के परिवार वालों की सहायता के लिए चन्दा एकत्रित कर रहे थे तो मुझे लगा कि क्यों न मैं इस बार दिवाली में पटाखों पर खर्च होने वाली राशि प्रधानमंत्री सहायता कोष में जमाकर दूँ. एक साल यदि मैं बिना पटाखों के ही दिवाली मना लूँ तो क्या फर्क पड़ेगा?''

उसकी बातों से मुझे जो प्रसन्नता हुई उसका वर्णन शब्दों में नही किया जा सकता. सचमुच जिस देश के नौनिहाल ऐसे ऊँचे विचार रखते हो उसका एक पाकिस्तान तो क्या पूरी दुनिया वाले भी मिलकर बाल बाँका नहीं कर सकते.

मानवता

पिछले महीने बस से अम्बिकापुर जाना हुआ. बस में मेरे बगल की सीट पर एक दिव्यांग वृद्ध बैठे हुए थे. उन्हें अस्पताल जाना था. अस्पताल बस स्टैण्ड से पहले पड़ता है. वृद्ध कंडक्टर से विनम्रतापूर्वक निवेदन किया कि उसे अस्पताल के पास उतार दे. कण्डक्टर ने साफ इंकार कर दिया. बेचारे वृद्ध मन मसोसकर रह गये.

कुछ देर बाद सामने की सीट पर बैठी कॉलेज की एक खूबसूरत लड़की ने कण्डक्टर से कहा कि वह घर से अपना पेन लाना भूल गयी है, इसलिए बस की थोड़ी देर के लिए पेन कार्नर के पास रोक दे. कण्डक्टर ने उसकी बात सहर्ष मान ली.

बस पेन कार्नर के सामने तब तक रूकी रही जब तक कि वह लड़की पेन खरीदकर वापस नहीं आ गयी.

विडम्बना

''ऊपर वाला जब देता है तो छप्पर फाड़ के देता है'' और ''समय से पहले तथा भाग्य से अधिक न कभी किसी को मिला है और न मिलेगा.'' ये बातें सिर्फ कहने सुनने के लिए ही नहीं है. अब रामलाल को ही देख लीजिए.

सरकारी नौकरी की आस लिए अपने जीवन के चौंतीस बसंत पार कर चुके एम.एस.सी. प्रथम श्रेणी में पास पी-एच.डी. उपाधिधारक डॉ. रामलाल पिछले दिनों डूबे मन से तथा ''नहीं मामा से काना मामा भला'' सोचकर के सचिवालय में भृत्य के पद हेतु आवेदन पत्र भर दिया था. कुछ दिन बाद संविदा सहायक प्राध्यापक की भर्ती के लिए भी आवेदन मंगाया गया. ''जब तक साँस है तब तक आस है'' वाली उक्ति को चरितार्थ करते हुए डॉ. रामलाल ने उसमें भी फार्म भरकर जमा कर दिया.

अप्रत्याशित ढंग से क्रमशः दोनों जगह से साक्षात्कार हेतु बुलावा पत्र रामलाल को मिला. साक्षात्कार आशानुरूप रहा. दोनों ही पदों के लिए उसका चयन हो गया.

परंतु हाय री किस्मत! सरकार और सरकारी नियमों के कारण डॉ. रामलाल ने सहायक प्राध्यापक की बजाय चपरासी के पद पर कार्यभार ग्रहण किया क्योंकि यह पद स्थायी था और एक निश्चित वेतनमान पर नियुक्त था, जबकि सहायक प्राध्यापक का पद संविदा आधार पर था और सालभर बाद फिर से सड़क पर आ जाने का खतरा था.

सेहत के लिए जरूरी है

भारतीय संस्कृति में जीने के कुछ ऐसे तौर-तरीके हैं जिनका हम कई पीढ़ियों से पालन करते आ रहे हैं, जैसे- उपवास करना, उठने और बैठने के ढंग, और पानी भरकर रखने के लिए तांबे के बर्तनों का प्रयोग...

योगिक विज्ञान में कुछ ऐसे सरल उपाय हैं सेहत और स्वस्थ के लिए उत्तम हैं। जैसे-उपवास करना, उठने और बैठने के ढंग, और पानी भरकर रखने के लिए तांबे के बर्तनों का प्रयोग..

1. तांबे के बर्तन का पानी पीयें

तांबे के बैक्टीरिया-नाशक गुणो में मेडिकल साईंस बड़ी गहरी रुचि ले रहा है. पिछले कुछ वर्षों में कई प्रयोग हुए है और वैज्ञानिकों ने यह मालूम किया है कि पानी की अपनी याददाश्त होती है - यह हर उस चीज को याद रखता है जिसको यह छूता है. पानी की अपनी स्मरण-शक्ति होने के कारण हम इस बात पर ध्यान देते है कि उसको कैसे बर्तन में रखे.

पहले सही तरह का खाना खाने की आदत डालें, तब उपवास की सोचे. अगर खाने की अपनी इच्छा को आप जबर्दस्ती रोकने की कोशिश करेंगे तो यह आपके शरीर को हानि पहुंचाएगा. अगर आप पानी को रात भर या कम-से-कम चार घंटे तक तांबे के बर्तन में रखें तो यह तांबे के कुछ गुण अपने में समा लेता है.

ताम्बे के बर्तन से पानी पीएं. यह पानी खास तौर पर आपके लीवर के लिए और आम तौर पर आपकी सेहत और शक्ति-स्फूर्ति के लिए उत्तम होता है. अगर पानी बड़ी तेजी के साथ पंप हो कर अनगिनत मोड़ों के चक्कर लगाकर लोहे या प्लास्टिक की पाइप के सहारे आपके घर तक पहुंचता है तो इन सब मोड़ों से रगड़ाते-टकराते गुजरने के कारण उसमें काफ़ी दोष आ जाता है. लेकिन पानी में याद्दाश्त के साथ-साथ अपने मूल रूप में वापस पहुंच पाने की शक्ति भी होती है. अगर आप नल के इस पानी को एक घंटे तक बिना हिलाये-डुलाये रख देते हैं तो दोष अपने-आप खत्म हो जाता है.

2. शरीर को नींद नहीं, आराम दें : आप सोने किस वक्त जाते है, यह तो आपके लाइफ स्टाइल पर निर्भर करता है, लेकिन महत्व इस बात का है कि आपको कितने घंटे की नींद की जरूरत है. अकसर कहा जाता है कि दिन में आठ घंटे की नींद लेनी ही चाहिए. आपके शरीर को जिस चीज की जरूरत है, वह नींद नहीं है, वह आराम है. अगर आप पूरे दिन अपने शरीर को आराम दें, अगर आपका काम, आपकी एक्सरसाइज सब कुछ आपके लिए एक आराम की तरह है तो अपने आप ही आपकी नींद के घंटे कम हो जाएंगे. लोग हर चीज तनाव में करना चाहते है. मैंने देखा है कि लोग पार्क में टहलते वक्त भी तनाव में होते है. अब इस तरह का व्यायाम तो आपको फायदे की बजाय नुकसान ही करेगा, क्योंकि आप हर चीज को इस तरह से ले रहे है जैसे कोई जंग लड़ रहे हो. आप आराम के साथ क्यों नहीं टहलते? चाहे टहलना हो या जॉगिंग,

उसे पूरी मस्ती और आराम के साथ क्यों नहीं कर सकते?

तो सवाल घूम फिर कर वही आता है कि मेरे शरीर को कितनी नींद की जरूरत है? यह इस बात पर निर्भर है कि आप किस तरह का शारीरिक श्रम करते है. आपको न तो भोजन की मात्रा तय करने की जरूरत है और न ही नींद के घंटे. मुझे इतनी कैलरी ही लेनी है, मुझे इतने घंटे की नींद ही लेनी है, जीवन जीने के लिए ये सब बेकार की बातें है. आज आप जो शारीरिक श्रम कर रहे है, उसका स्तर कम है, तो आप कम खाएं. कल अगर आपको ज्यादा काम करना है तो आप ज्यादा खाएं. नींद के साथ भी ऐसा ही है. जिस वक्त आपके शरीर को पूरा आराम मिल जाएगा, यह उठ जाएगा चाहे सुबह के 3 बजे हो या 8. आपका शरीर अलार्म की घंटी बजने पर नही उठना चाहिए. एक बार अगर शरीर आराम कर ले तो उसे खुद ही जग जाना चाहिए.

3. दो हफ्ते में एक बार उपवास करें : आप शरीर के प्राकृतिक चक्र से जुड़ा 'मंडल' नाम की एक चीज होती है. मंडल का मतलब है कि हर 40 से 48 दिनों में शरीर एक खास चक्र से गुजरता है.

हर चक्र में तीन दिन ऐसे होते है जिनमें आपके शरीर को भोजन की आवश्यकता नहीं होती. अगर आप अपने शरीर को लेकर सजग हो जाएंगे तो आपको खुद भी इस बात का अहसास हो जाएगा कि इन दिनों में शरीर को भोजन की जरूरत नहीं होती. इनमें से किसी भी एक दिन आप बिना भोजन के आराम से रह सकते है.

11 से 14 दिनों में एक दिन ऐसा भी आता है, जब आपका कुछ भी खाने का मन नहीं करेगा. उस दिन आपको नहीं खाना चाहिए. आपको यह जानकार हैरानी होगी कि कुत्ते और बिल्लियों के अंदर भी इतनी सजगता होती है. कभी गौर से देखें, किसी खास दिन वे कुछ भी नहीं खाते. दरअसल, अपने सिस्टम के प्रति वे पूरी तरह सजग होते है. जिस दिन सिस्टम कहता है कि आज खाना नहीं चाहिए, वह दिन उनके लिए शरीर की सफाई का दिन बन जाता है और उस दिन वे कुछ भी नहीं खाते. अब आपके भीतर तो इतनी जागरूकता नहीं कि आप उन खास दिनों को पहचान सके. फिर क्या किया जाए! बस इस समस्या के समाधान के लिए अपने यहां एकादशी का दिन तय कर दिया गया. हिंदी महीनों के हिसाब से देखें तो हर 14 दिनों में एक बार एकादशी आती है. इसका मतलब हुआ कि हर 14 दिनों में आप एक दिन बिना खाए रह सकते हैं. अगर आप बिना कुछ खाए रह ही नहीं सकते या आपका कामकाज ऐसा है, जिसके चलते भूखा रहना आपके वश में नहीं और भूखे रहने के लिए जिस साधना की जरूरत होती है, वह भी आपके पास नहीं है, तो आप फलाहार ले सकते है. कुल मिलाकर बात इतनी है कि बस अपने सिस्टम के प्रति जागरूक हो जाएं.

एक बात और, अगर आप बार-बार चाय और कॉफ़ी पीने के आदी है और उपवास रखने की कोशिश करते है तो आपको बहुत ज्यादा दिक्कत होगी. इस समस्या का तो एक ही हल है. अगर आप उपवास रखना चाहते है तो सबसे पहले अपने खानपान की आदतों को सुधारे. पहले सही तरह का खाना खाने की आदत डालें, तब उपवास की सोचें. अगर खाने की अपनी इच्छा को आप जबर्दस्ती रोकने की कोशिश करेंगे तो यह आपके शरीर को हानि पहुंचाएगा. यहां एक बात और बहुत महत्वपूर्ण है कि किसी भी हाल में जबर्दस्ती न की जाए.

संपादक के नाम पाती

आप सभी पाठकगण पत्रिका में प्रकाशित लेखो पर अपने विचार या कोई सुझाव नीचे दिये गये ई-मेल आईडी पर भेज सकते है। स्थान की उपलब्धता के हिसाब से हम आपके विचारों को शामिल करने का प्रयास करेंगे।

vsnehsamaj@rediffmail.com

-संपादक

सम्मानित पाठकों अपनी प्रतिक्रियाओं, शिकायतों, सुझावों से हमें अवगत कराते रहे ताकि पत्रिका को निखारने, उपयोगी बनाने में हमें मिल सके. धन्यवाद।

संपादक

सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,** 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

1–20 **वर्ष से कम उम्र वालों के लिए:** पं. नेहरु सम्मान(देश हित व समाज सेवा), चन्द्रावती देवी सम्मान (हिन्दी व साहित्य सेवा), गोरखनाथ दुबे स्मृति सम्मान(समाज सेवा), बचपना सम्मान (किसी भी क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए) 2–20 से 40 **वर्ष के लिए:** काका कलाम सम्मान, कल्पना चावला सम्मान (विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखीय योगदान के लिए), पवहारी शरण द्विवेदी सम्मान(समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखीय योगदान के लिए) निर्भया सम्मान-(महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए किए गये कार्य के लिए), पत्रकारश्री (पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान), कलाश्री(कला (नाटक/गायन/वादन/चित्रकला, नृत्य) के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), समाजश्री (समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), काव्यश्री (काव्य लेखन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), व्यंग्यश्री (व्यंग्य-गद्य/पद्य लेखन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), कहानीश्री (लघुकथा/कहानी के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए) 3–40 **वर्ष से ऊपर के लिए:** डॉ. होमी जहांगीर भाभा सम्मान (विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), पत्रकार रत्न (पत्रकारिता/संपादन के क्षेत्र में कम से कम बीस वर्ष का अनुभव), समाज शिरोमणि (समाज सेवा के क्षेत्र में कम से कम बीस वर्ष का अनुभव), काव्य शिरोमणि (एक पुस्तक न्यूनतम 100 पृष्ठीय पाण्डुलिपि/प्रकाशित), साहित्य शिरोमणि (समग्र साहित्य लेखन, एक पुस्तक न्यूनतम 100 पृष्ठीय पाण्डुलिपि/प्रकाशित) **4-सभी आयु वर्ग के लिए: हिन्दी सेवियों के लिए:** विशिष्ट हिन्दी सेवी/हिंदी सेवी सम्मान (हिन्दी की विशेष सेवा के लिए), **राष्ट्रभाषा सम्मान** (हिन्दीत्तर भाषी राज्यों के हिन्दी प्रेमियों के लिए जो हिन्दी का व्यापक प्रचार-प्रसार व लेखन कार्य कर रहे है), **राजभाषा सम्मान**-(सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए). **शिक्षकश्री:** (शिक्षा के क्षेत्र में योगदान के लिए), **विधिश्री**-(विधि के क्षेत्र में रहते हुए हिन्दी सेवा के लिए) 5-समग्र साहित्य के लिए संस्थान की सबसे बड़ी उपाधियां क्रमशः साहित्य रत्न(डी.लिट), साहित्य गौरव(डाक्टरेट/पीएचडी), साहित्यश्री हैं. इनके लिए कम से कम 100 पृष्ठों की किसी एक विषय पर साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,** 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-1–20 **वर्ष से कम उम्र वालों के लिए:** पं. नेहरु सम्मान(देश हित व समाज सेवा), चन्द्रावती देवी सम्मान (हिन्दी व साहित्य सेवा), गोरखनाथ दुबे स्मृति सम्मान(समाज सेवा), बचपना सम्मान (किसी भी क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए) 2–20 से 40 **वर्ष के लिए:** काका कलाम सम्मान, कल्पना चावला सम्मान (विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखीय योगदान के लिए), पवहारी शरण द्विवेदी सम्मान(समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखीय योगदान के लिए) निर्भया सम्मान-(महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए किए गये कार्य के लिए), पत्रकारश्री (पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान), कलाश्री(कला (नाटक/गायन/वादन/चित्रकला, नृत्य) के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), समाजश्री (समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), काव्यश्री (काव्य लेखन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), व्यंग्यश्री (व्यंग्य-गद्य/पद्य लेखन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), कहानीश्री (लघुकथा/कहानी के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए) 3–40 **वर्ष से ऊपर के लिए:** डॉ. होमी जहांगीर भाभा सम्मान (विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), पत्रकार रत्न (पत्रकारिता/संपादन के क्षेत्र में कम से कम बीस वर्ष का अनुभव), समाज शिरोमणि (समाज सेवा के क्षेत्र में कम से कम बीस वर्ष का अनुभव), काव्य शिरोमणि (एक पुस्तक न्यूनतम 100 पृष्ठीय पाण्डुलिपि/प्रकाशित), साहित्य शिरोमणि (समग्र साहित्य लेखन, एक पुस्तक न्यूनतम 100 पृष्ठीय पाण्डुलिपि/प्रकाशित) **4-सभी आयु वर्ग के लिए: हिन्दी सेवियों के लिए:** विशिष्ट हिन्दी सेवी/हिंदी सेवी सम्मान (हिन्दी की विशेष सेवा के लिए), **राष्ट्रभाषा सम्मान** (हिन्दीत्तर भाषी राज्यों के हिन्दी

प्रेमियों के लिए जो हिन्दी का व्यापक प्रचार-प्रसार व लेखन कार्य कर रहे है), **राजभाषा सम्मान**-(सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए). **शिक्षकश्रीः** (शिक्षा के क्षेत्र में योगदान के लिए), **विधिश्री**-(विधि के क्षेत्र में रहते हुए हिन्दी सेवा के लिए)

5-समग्र साहित्य के लिए संस्थान की सबसे बड़ी उपाधियां क्रमशः साहित्य रत्न(डी.लिट), साहित्य गौरव(डाक्टरेट/पीएचडी), साहित्यश्री हैं. इनके लिए कम से कम 100 पृष्ठों की किसी एक विषय पर लिखि पाण्डुलिपि जो 2016 के बाद लिखी गई हो, प्रकाशित/अप्रकाशित हो, पर दिया जाएगा. प्रत्येक के लिए दो हिन्दी साहित्य सेवी प्रस्तावक का होना आवश्यक है.

विशेषः 1. प्रत्येक वर्ग के लिए दिये गये विभिन्न सम्मानों के लिए उत्कृष्ठ किसी एक का ही चयन किया जाएगा। 2. उपाधियों के लिए चयन त्रिस्तरीय निर्णायक मंडल द्वारा किया जाएगा. 3. प्रत्येक प्रविष्टि के साथ सम्बन्धित प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में तथा साथ में एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका भेजना होगा। 4. क्रम संख्या एक के लिए सहयोग राशि रुपये 100/ मात्र तथा क्रम संख्या 2 से 5 के लिए रुपये 500/ सहयोग अपेक्षित है। 5. सभी आयु वर्ग में शामिल प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज मासिक की वार्षिक सदस्यता (रुपये 150/ निशुल्क) प्रदान की जायेगी। 6. सभी वर्ग में विजयी प्रतिभागियों को विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान की साधारण सदस्यता निःशुल्क प्रदान की जाएगी। 7. क्र.सं. 2 से 5 तक के सभी प्रतिभागियों को संस्थान द्वारा प्रकाशित रुपये 500/ तक की पुस्तकें उपहार स्वरुप प्रदान की जायेगी। 8. सहयोग राशि बैंक ड्राफ्ट/ध नादेश/ सीधे खाते में (आन लाईन/ऑफ लाईन) **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी भी शाखा से 'सचिव **विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद**' के नाम से खाता संख्याः **538702010009259** आईएफएससी कोड–**यूबीआईएन–0553875** में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा. 9. किसी भी दशा में रचनाएं व सहयोग राशि लौटाई नहीं जाएँगी. 10. रचनाओं के साथ मौलिकता को दर्शाना अनिवार्य होगा. सम्मान डाक से प्रेषित नहीं किया जाएगा. 11. अपूर्ण प्रविष्टियों पर विचार करना संभव नहीं होगा। 12. किसी प्रकार के विवाद के संबंध में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद(प्रयागराज) होगा. अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए ईमेल करे, या व्हाट्सएप करें:

अंतिम तिथिः 15 नवम्बर 2019

संपर्क कार्यालयः

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
65ए/2, श्याम डी.जे., लक्सों कंपनी के सामने, रामचन्द चन्द्र मिशन रोड, मुंडेरा,
धूमनगंज, इलाहाबाद (प्रयागराज)–211011, ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com,
hindiseva15@gmail.com, 9335155949

क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण **1.प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर 2. बिक्री की व्यवस्था 3.प्रचार-प्रसार की व्यवस्था 4.विमोचन की व्यवस्था**

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें

प्रसार सचिव,

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011

ई–मेलः sahityaseva@rediffmail.com

चिट्ठी नहीं आती

-सीताराम गुप्ता, दिल्ली

पत्रिका शीराज़ा में आशा शैली की कविता ''चिट्ठी नहीं आती'' पढ़ रहा था. अब डाक आती है/चिट्ठी नहीं आती यही सच है आज का. सूचना क्रांति के दौर में बहुत कुछ बदल गया है. चिट्ठियों में अपने भावों को सहज रूप से पिरोने का ज़माना बीत गया. ख़त लिखने का हुनर भी ख़तरे में ही समझो. न जाने कितने बरस बीत गए किसी की कोई आत्मीय चिट्ठी पाए और किसी को लिखे. चिट्ठियां लिखने, लिखवाने व बंचवाने का दौर-दौरा कब का अतीत हो चुका बस यादें बाक़ी हैं. चिट्ठियों का बड़ी शिद्दत से इंतज़ार होता था. पिताजी भी साल के कई महीने बाहर रहते थे. उनकी चिट्ठियों का तो बेहद बेसब्री इंतज़ार रहता था. मैं चौथी कक्षा में था तभी से पिताजी को लिखने लगा था. उनका निर्देश था कि मैं हर हफ़्ते उनको चिट्ठी लिखकर घर के सभी समाचार भेजता रहूं.

छत्तीसगढ़ से **मुंडी हिन्दी** में लिखी चाचाजी की चिट्ठियां आती थीं. मेरे चाचाजी छत्तीसगढ़ के एक गांव में रहते थे और हम दिल्ली के एक गांव नांगल ठाकरान में. हम पीतमपुरा आ गए तो भी वह सिलसिला उनके अंतिम समय तक जारी रहा. हमारे बीच संपर्क का साधन ये चिट्ठियां ही होती थीं. चाचाजी और मेरे दरमियान इस अनूठे ख़तो-किताबत का सिलसिला पूरे अड़तीस साल तक जारी रहा. यही कारण है कि मैं इस सरल लेकिन अल्पव्यवहृत लिपि मुंडी हिन्दी को पढ़ पाता था. आज वो पूर्णतः विस्मष्त हो गई है.

दूसरे रिश्तेदारों की चिट्ठियां भी ख़ूब आती थीं. किसी की मष्त्यु का समाचार होता तो पढ़े बिना ही पता चल जाता था कि किसी का इंतक़ाल हो गया है कारण ऐसी चिट्ठियों के कोने फटे होते थे. ऐसी चिट्ठियों को सहेज कर रखने की बजाय पढ़ने के बाद फाड़कर फेंक देते थे. शादी की चिट्ठियों पर हल्दी के छींटे लगे होते थे. चिट्ठी पढ़ने से पहले बड़ी उत्सुकता पैदा हो जाती थी कि किस की शादी होने जा रही है. चिट्ठी पढ़ने से पहले ही सब लोग अपनी-अपनी राय ज़ाहिर कर देते थे. चिट्ठियां संभाल कर रखी जाती थीं. पुराना फाइलिंग सिस्टम था बाबाजी के ज़माने का. चिट्ठियों को तार में पिरोकर रखते थे जो जो एक खूंटी पर टंगा रहता था. पहले हम दिल्ली के एक गांव नांगल ठाकरान में रहते थे. जब गांव में थे तो पास के एक दूसरे गांव बाजीतपुर से एक साहब हमारे पास आते थे चिट्ठियां पढ़वाने जो पाकिस्तान से आती थीं उर्दू में लिखी हुई. (मेरे पास और मेरे अनुज प्रेम नारायण गुप्ता के पास क्योंकि हम दोनों को उर्दू आती है) मुझसे बड़ी उम्र के थे. हमारी उम्र का तो क्या हमसे बड़ी उम्र का भी कोई व्यक्ति उर्दू न जानता था इस बात पर हैरान होते थे. बहुत ज़्यादा उम्र के कुछ चुनिंदा लोग ही जानते थे उर्दू. ख़ैर चिट्ठी बंचवाते और पाकिस्तान के हालात पर चर्चा करते. लगे हाथ भारत-पाक संबंधों पर भी विचार-विमर्ष हो जाता. तीस-पैंतीस साल पुरानी बात है. उस समय भारत-पाक संबंध इतने अधिक जटिल नहीं हुए थे.

फिर मेरे बाबाजी (दादाजी) व पिताजी की चर्चा छेड़ देते. बाबाजी की सादगी व ईमानदारी की बातें करते हुए कुछ भावुक से हो जाते. हां, वो थे ही इस लायक़. इसके बाद मेरे पिताजी के क़िस्से सुनाने लगते. कैसे उन्होंने अपने से ताक़तवर एक पहलवान को एक ही दांव में चित्त कर दिया था. ये क़िस्सा बयान करते हुए उन्हें जैसे जोश आ जाता था. इसके बाद चाय तो बनती ही थी. इस सिलसिले में हमने कई बार साथ चाय पी. गांव से षहर मुंतक़िल हो जाने पर ये सिलसिला टूट गया. अब तो सिर्फ़ यादें ही बची हैं. वैसे भी अब जब चिट्ठियां नहीं आतीं तो कोई चिट्ठियां बंचवाने आए भी कैसे? लोग भी अपनों को चिट्ठियां लिखें तो कैसे बेचारों को सोशल मीडिया से ही फ़ुर्सत नहीं.